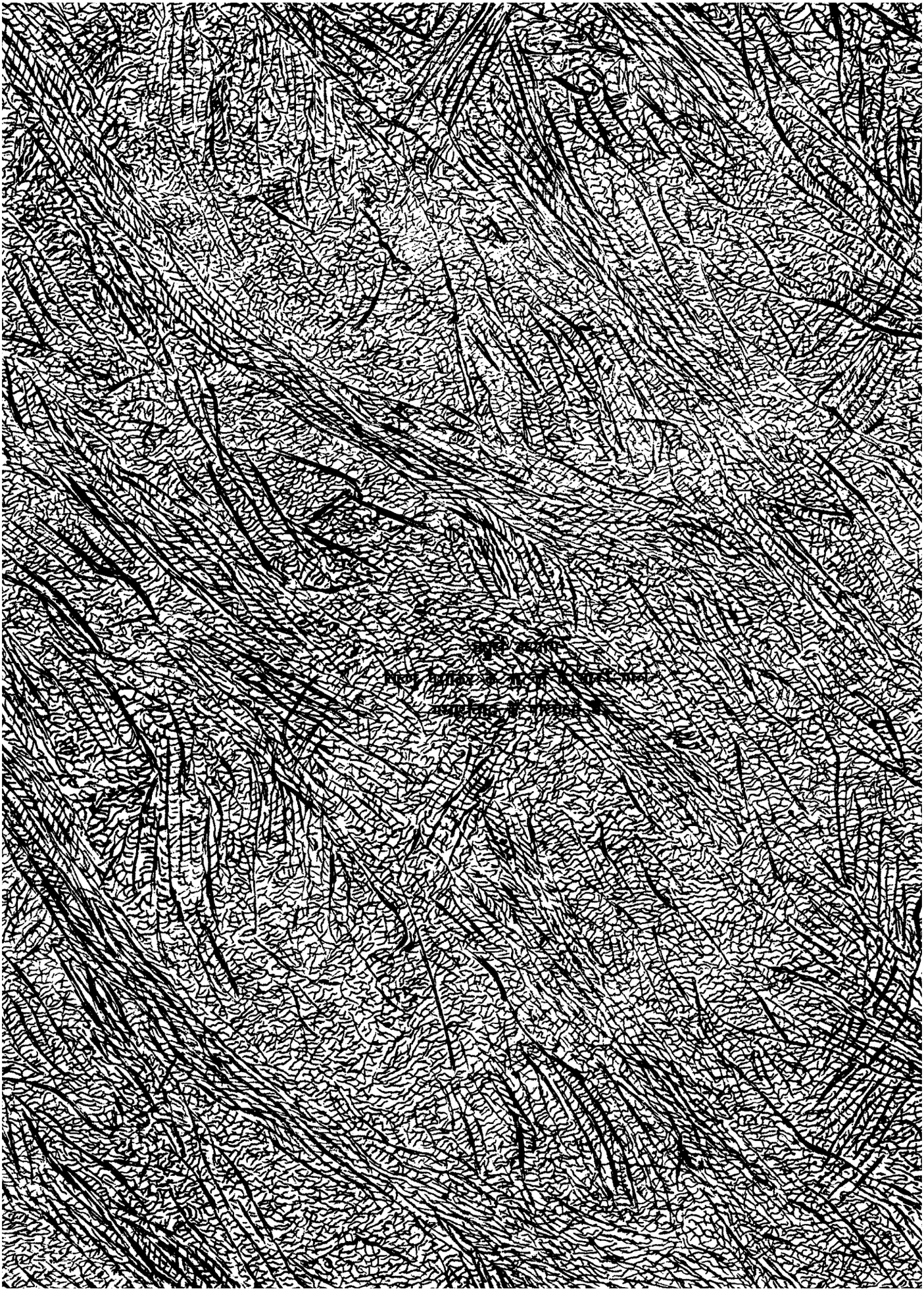

चतुर्थ अध्याय

विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी-पात्र

यथार्थवाद के परिप्रेक्ष्य में

भूमिका :

मानव जीवन में हमेशा आदर्श और यथार्थ का मिलन, सम्मिलन या संघर्ष भी दिखायी पड़ता है। मानव के आचार, विचार तथा अन्य परिस्थितियों के अनुसार उसके जीवन में कुछ बातें घटीत होती है और इसीकारण उसे आदर्शवादी, आदर्शोन्मुख यथार्थवादी या यथार्थवादी, ठोस यथार्थवादी आदि संज्ञाओं से अभिहित किया जाता है। विष्णु प्रभाकर के नाटकों के नारी पात्र आदर्शवादी भी है। और यथार्थवादी भी। प्रस्तुत अध्याय में उनके नाटकों के यथार्थवादी नारी पात्रों पर प्रकाश डालना हमें अभिप्रेत है।

साहित्य में यथार्थवाद :

यथार्थवाद यह साहित्य की एक विशिष्ट चिन्तन पद्धति है। जिसके अनुसार कलाकार अपनी कृति में जीवन का यथार्थ रूप का चित्रण करता है। यह दृष्टिकोण वस्तुत: आदर्शवाद का विरोधी माना जाता है। पते की बात यह है कि जीवन में अयथार्थ की कल्पना दुष्कर है। " अपने पारिभाषिक अर्थ में यथार्थवाद जीवन की समग्र परिस्थितियों के ईमानदारी का दावा करते हुए भी प्राय: सदैव मनुष्य की हीनताओं तथा कुरूपताओं का चित्रण करता है। यथार्थवादी कलाकार जीवन के सुन्दर अंश को छोडकर असुन्दर अंशका अंकन करना चाहता है। यह एक प्रकार से उसका पूर्वाग्रह है।।"[1] यथार्थवाद सुधारक साहित्य का प्रथम अस्त्र है। किसी भी सामाजिक स्थिति के प्रति विद्रोह करते समय साहित्यकार उसका यथार्थवादी चित्र उपस्थित करता है। साहित्यकार अपने पाठक के मन में उन आक्रोश को जन्म देना चाहता है जिसके बिना किसी सुधार, परिवर्तन अथवा क्रांति की कल्पना नहीं की जा सकती। साहित्यकार इस चित्रण में यह ध्यान नहीं रखता कि उसके चित्रण में कोई आदर्श है अथवा नहीं है। यथार्थ चित्रण ही उसका लक्ष्य होता है। " मानव मानव है, पशु नहीं है इसीलिए उस में न्यूनाधिक प्रमाण में कुछ आदर्श होते ही हैं उसकी यह विशेषाता उसे अन्य प्राणियों से पृथक करती है। जिस प्रकार प्रत्येक जीवन में सुख दु:ख का मिश्रण होता है उसी प्रकार प्रत्येक मानव में अच्छाई या बुराई में दोनों विद्यमान होती है। हम अच्छाई को आदर्श कहते हैं और बुराई को

उसके दोष कहते हैं। अतः यथार्थवादी चित्रण में अच्छाई – बुराई – व्यक्ति के आदर्श गुणों और दोषों दोनों का स्थान होता है। "[2] जीवन के सुन्दर और असुन्दर दोनों अंशों का यथार्थ चित्रण ही यथार्थवादी चित्रण कहा जा सकता है। मानव जीवन के विकास में यथार्थ का अत्याधिक महत्त्व है। सच तो बात यह है जिसे अपने यथार्थ का बोध नहीं है उसका जीवन सुव्यवस्थित और विकासशील होना संभव नहीं। मानव–जीवन के यथार्थबोध ने ही समय समय पर मानवता का उद्धार किया है। " यथार्थवादी साहित्य सुधार, परिवर्तन अथवा क्रांति का जन्मदाता है, उत्थान का संदेश वाहक है पतन का उन्नायक नहीं। "[3] यथार्थवाद के युरोपीय और भारतीय साहित्य में भी अनेक रूपों में विकासित हुआ है। स्थूल रूप से हम इसे विशुद्ध यथार्थवाद समाजवादी, पर्यायवादी, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, प्रगतिवादी यथार्थवाद और अति यथार्थवादी के रूप में विभाजीत कर सकते हैं। हिन्दी साहित्य में यथार्थवादी प्रवृत्तियाँ मध्यकाल से ही दिखायी देने लगती है। सन्त कबीर एक प्रकार से हिन्दी के प्रथम यथार्थवादी कवि है। उनके जमाने में समाज में जो खोकलापन घर कर गया था उसका अत्यंत सशक्त चित्रण उन्होंने अपने काल में किया है। गोस्वामी तुलसीदास में भी किसी हद तक यथार्थवादी प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। आधुनिक अर्थ में यथार्थवाद का हिन्दी साहित्य में प्रथम विकास प्रगतिवाद के माध्यम से हुआ। द्विवेदीयुगीन आदर्श प्रियता तथा छायावादी काल्पनिक जगत के विरूद्ध जो प्रतिक्रिया हुयी उसने प्रगतिवादी साहित्य–सर्जन में यथार्थवाद को अपरिहार्य अंग बना दिया। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि सभी रूपों में आधुनिक जीवन के गहरे संघर्षों, विद्रूपों, अन्तर्द्वंद्वों तथा कुरूप्ताओं का अंकन हुआ। इस युग के दो मनीषी मार्क्स तथा फ्रायड ने अपने अपने ढंग से यथार्थवाद के विकास में योगदान दिया। हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद की मौलिक शक्ति – सम्भावना यथार्थवाद को लेकर विकसित हुयी। प्रयोगवाद में यथार्थवाद की प्रवृत्ति गहरी हुयी। द्वितीय महायुद्ध ने यथार्थवाद को साहित्य में अधिक ग्राह्य बनाया। प्रयोगवादी यथार्थ के साथ एक व्यापक तथा उदार मानवतावादी भावना संयुक्त थी। तो आगे चलकर नयी कविता आन्दोलन के साथ अधिक विकसित हुयी। हिन्दी का आधुनिक यथार्थवाद साम्प्रदायिक न रहकर उक्त मानवतावादी प्रवृत्तियों के संभोग से साहित्य के यंत्र में अधिक कलात्मक तथा सामाजिक बन सका है। " साहित्य आदर्श और यथार्थ – दोनों को ही अपनाकर चले। उसका भवन यथार्थ की नींव पर खड़ा हो पर उसका विलास, प्रस्तार और ऊँचाई के लिए आदर्शवाद का विस्तृत और उन्मुक्त आकाश रहे। ऐसा साहित्य ही सर्वजन सुलभ, सर्वमान्य और सर्वहितकारी हो सकता है। "[4] इसमें संदेह नहीं कि साहित्य में प्रतिबिंबित यथार्थवाद मानव जीवन की वास्तविकता की द्योतक है।

विष्णु प्रभाकर का नारी विषयक यथार्थवादी दृष्टिकोण :

विष्णु प्रभाकर बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। वरिष्ठ लेखक श्री विष्णु प्रभाकरजी ने नाटककार

कहानीकार, उपन्यासकार, जीवनीकार तथा विचारक के रूप में ख्याति अर्जित की है। वे शुद्ध मानवतावादी लेखक है। वे मानव मन की गहराईयों में उतरकर समस्याओं के मूल स्वरूप की खोज करते हैं। उनके साहित्य में यथार्थ समस्याओं का चित्रण मिलता है। उनके साहित्य को हम काल की सीमा में नहीं बाँध सकते क्योंकि वह सर्वकालिक है। वे स्वस्थ दृष्टि से समाज और समाज में प्रचलित मानव जीवन की समस्याओं का सुलझाव ढूँढने की कोशिश करते हैं। जब इन समस्याओं का सुलझाव गांधीवाद में नहीं मिल पाता तो अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर वे गांधीवाद से प्रगतिवाद की ओर और आदर्शवाद से यथार्थवाद की तरफ स्वयं ही बढ़ते हैं। विष्णु प्रभाकरजी राष्ट्रीय निर्माण के सजग और सक्रिय सैनिक होने के कारण उनकी रचनाओं में जीवन संघर्ष और समस्याओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत हुआ है। डॉ. राजलक्ष्मी नायडू लिखती है, " श्री विष्णु प्रभाकर ने अपने सभी नाटकों में मनुष्य के व्यक्तिगत और समाजगत वैषम्यों और विविध जटील समस्याओं से संघर्ष का यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत किया है। इन्होंने अपने नाटकों में समस्या से जूझते मानव, सामन्ती और पूँजीवादी जीवन की जर्जरता, समाज की पुरानी मान्यताओं और मर्यादाओं के खोकलेपन मनुष्य की दुर्बलताएँ और उसकी समस्याएँ, मानव की आशा निराशा और अवसादपूर्ण जीवन का ऐसा चित्रण विष्णुजी ने अपने नाटकों में किया है कि हमें इन सारे दृश्यों को देखकर जीवन से जुझते हुए आगे बढ़ने का बल मिलता है। "[5] विष्णु प्रभाकर के मतानुसार यथार्थ को प्रकट करने का उपन्यास सब से बड़ा और सशक्त माध्यम है। ' निशिकान्त " की नायिका कमला के माध्यम से नारी भावना का चरम विकास हुआ है। निशिकान्त में उपन्यासकार विष्णु प्रभाकरजी ने माँ के ममतामयी रूप को प्रकट किया है। माँ हर घड़ी हर पल हर क्षण अपने बेटे की भलाई के लिए चिंतित है। " तट के बन्धन " इस उपन्यास के माध्यम से विष्णु प्रभाकरजी यह बताना चाहते हैं कि आधुनिक लडकियाँ समाज में किस प्रकार पीड़ित है। दहेज के कारण विवाह में कठिनाई आती है। दहेज, जातिवाद तथा परम्परागत विवाह प्रथा से पीड़ित समाज में लडकियों पर जो बीतती है उसका यथार्थ विश्लेषण लेखक ने बड़ी कुशलता से किया है। प्रस्तुत उपन्यास में नारी पात्रों हम एक नवीन धरातलपर खड़ा पाते हैं। इस उपन्यास के द्वारा उपन्यासकार ने संसार की नारियों को आवाहन किया है कि सभी बन्धनों को तोडकर प्रगति के पथपर अग्रसर हो जाओ। तभी समाज का सुधार हो सकता है। "[6] " गृहस्थी " कहानी में पति के प्रति पत्नी का आक्रोश मानसिक द्वंद्व, संघर्ष, खीझ झुँझलाहट आदि का भयंकर रूप जब पत्नी को छोडने की स्थिति में ठेलता है जब पति की भावभीती झुँझलाहट वस्तुत: कथा का मार्मिक अंश बन जाता है। जो यथार्थ और प्रभावशाली है। " धरती अब भी घूम रही है " विष्णु प्रभाकर जी की सबसे चर्चित यथार्थवादी कहानी रही है जिसमें लेखक ने आज के समाज में फैले भ्रष्टाचार पर कटु प्रहार किया है। " डॉक्टर " की रचना एक ऐसी नारी के जीवन पर आधारित है जो पति द्वारा परित्यक्त

कर दी गयी है और अपने भाई के सहयोग से जो कुशल डॉक्टर बनती है। डॉ. अनीता को डर है कि कहीं बदले की आग में जलकर वह नयी मरीजा मालव अपने सौतन की हत्या न कर दे। डॉक्टर यह नाटक मानसिक द्वंद्व को लेकर चलता है। अन्त में वह कुशलता से नयी मरीजा का ऑपरेशन करती है। यह नाटक मूलत: यथार्थवादी शिल्प पर आधारित है। विष्णु जी सजग रचनाकार है। " टगर " नाटक यह एक ऐसे स्त्री की त्रासदी है जो पति शेखर द्वारा उपेक्षित होने के बाद संपूर्ण पुरूष जाति से बदला लेना चाहती है। अंत में उसे आत्मग्लानि होती है। नाटककार विष्णु प्रभाकर ने " डॉक्टर " और " टगर " दो अलग अलग भावों का अलग अलग ढंग से विचार किया है। दोनों के मन में संघर्ष का एक ही भाव है और वह है पुरूष जाति से बदला लेकिन बदला लेने की प्रवृत्ति एवं प्रक्रिया दोनों स्त्री पात्र में अलग अलग है। " बन्दिनी " इस नाटक की कथावस्तु का आधार अन्धविश्वास पर ही आधारित है। विज्ञान के जमाने में आज भी गाँवों और कस्बों में अन्धविश्वास को लोग मानते हैं। आज भी यहाँ पर देवी अवतारित होती है। श्रद्धा के साथ उसे पूजा जाता है। कुछ नारियाँ अन्धविश्वास की शिकार बन जाती है। " कुहासा और किरण " नाटक में कुछ प्रमुख प्रतिनिधी पात्रों की जीवन घटनाओं के द्वारा भारत के विभिन्न वर्गों की यथार्थ सत्य एवं पाखंडपूर्ण कहानी कही गयी है। इस नाटक से हमें देश की उन सैंकडो दीन दु:खी नारियों का ज्ञान होता है। जिनके पतियों ने देश की आजादी के लिए अपने जान की कुर्बानी दी। " युगे युगे क्रान्ति " की शारदा साहसी है वह पुराने रीति रिवाजों को तोड़ना चाहती है और स्वयं स्वीकार करती है कि समय बदल गया है, – " नारी पुरूष से किसी भी बात में पीछे नहीं है। उसके अधिकार समान है, उसके कर्तव्य भी समान है। इसीलिए मेरी प्यारी बहनों हमने निश्चय किया है कि पुरूषों के साथ साथ हम भी पिकेटिंग करेगी। वे (स्त्रियाँ) शक्ति है और शक्ति के मार्ग में घर की चार दिवारी तो क्या, हिमालय जैसे नागाधिराज भी बाधा नहीं दे सकते। "[7] " अब और नहीं " नाटक की शान्ता दबावग्रस्त नारी है। इस नाटक के माध्यम से नाटककार बताना चाहते हैं पुरूष से ही नारी का शोषण हुआ है। पुरूष ही उसके प्रति होनेवाले अत्याचारों के लिए जिम्मेदार है। विष्णु प्रभाकरजी नारी स्वातंत्र्य और स्वावलम्बी नारी के समर्थक रहे हैं। इसतरह विष्णु प्रभाकरजी ने विविध प्रकार की व्यावसायिक स्त्रियों को अपने नाटकों में चित्रीत किया है। जो पुरूष पर निर्भर नहीं रहती। वह अपने पैरोंपर खड़ा होना चाहती है। विष्णु प्रभाकर जी के नाटकों के यथार्थवादी नारी पात्र किसी न किसी प्रकार का व्यवसाय या धन्धा करनेवाले कुछ विद्रोही एवं स्वच्छंदी कुछ पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगे हुए अत्याधुनिक, कुछ परित्यक्ता, कुछ मासूम बालिका, कुछ अन्धविश्वासी है। इन सब पात्रों को यथार्थवाद के धरातलपर विष्णु प्रभाकर ने बड़ी सजगता एवं कुशलता से चित्रीत किया है।

विष्णु प्रभाकर के नाटकों के यथार्थवादी नारी पात्र :

जहाँ एक ओर विष्णु प्रभाकर ने अपने नाटकों में आदर्शवादी पात्रों को अंकीत किया है वहाँ दूसरी ओर उन्होंने यथार्थवादी पात्रों को भी शब्दांकित किया है। विष्णु प्रभाकर के यथार्थवादी पात्र बहुआयामी व्यक्तित्त्ववाले हैं। ये पात्र आधुनिक जीवन संदर्भ की झाँकी प्रस्तुत करते हैं। विष्णु प्रभाकर के अधिकतर यथार्थवादी नारी पात्र मुख्यतया किसी न किसी प्रकार का व्यवसाय या धन्दा करनेवाले हैं। साथ ही साथ कुछ नारी पात्र ऐसे है जो विद्रोही और स्वच्छंदी भी है। इतना ही नहीं कुछ नारी पात्र अत्याधुनिका नारी रूप में रेखांकित है। विष्णु प्रभाकर जी ने परित्यक्त नारी को भी रूपायित किया है और अन्धविश्वासी नारी पात्रों को भी चित्रीत किया है। अन्य नारी पात्रों में आज की सास, बेटी वासना की शिकार तथा दो बालिकाओं को प्रभाकरजी ने यथार्थवाद के धरातल पर चित्रीत किया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से विष्णु प्रभाकर के नाटकों यथार्थवादी नारी पात्रों का वर्गीकरण इस्तरह किया जा सकता है।

आदर्शवादी नारी पात्र

- अ — व्यावसायिक नारी पात्र
- आ — विद्रोही नारी पात्र
- इ — स्वच्छंदी नारी पात्र
- ई — अत्याधुनिका नारी पात्र
- उ — परित्यक्ता नारी पात्र
- ऊ — अन्धविश्वासी नारी पात्र
- ए. — अन्य नारी पात्र

1) डॉक्टर

2) अफसर

3) कर्मचारी

4) साहित्यकार

5) परिचारिका/सेविका

6) मधुआरिन

7) वेश्या

अ) व्यावसायिक नारी पात्र :

यथापि इन्सान के सामने रोजी रोटी का सवाल प्राचीन काल से ही खड़ा हुआ दिखायी पड़ता है

लेकिन आज की नारी जो व्यावसायिक बनी है वह मुख्यतया स्वयं निर्भर होने की दृष्टि से ही उसका एक ठोस प्रयास है। वह पुरूषपर निर्भर रहने की अपेक्षा खुद के पैरों खड़ा होना चाहती है। साथ ही साथ उसकी स्वतंत्रता, इज्जत, अभिमान आदि को भी वह उन्नयन की ओर लेने की कोशिश करती है। साथ ही साथ सामान्य रूप से अर्थोपार्जन करने के लिये भी वह विवश होती है। नाटककार ने इस दृष्टि से विविध प्रकार की व्यावसायिक स्त्रियों को अपने नाटकों में चित्रीत किया है। जो मुख्यतया यथार्थवाद से ही परिचालित है।

1) डॉक्टर :

क) डॉक्टर अनीला : (डॉक्टर)

अनीला " डॉक्टर " नाटक की नायिका है। वह इस सामाजिक नाटक की प्रमुख नारी पात्र है। वह शहर की सब से बड़ी मशहूर डॉक्टर है। उसके हाथ में शफा एवं यश है। मरीज को मौत के मुँह में से वापस लाना उसके दाये नहीं तो बायें हाथ का खेल है। उसे अपना डॉक्टरी फर्ज दिलोजान से प्यारा है। उसे हर पल अपने मरीजों का खयाल रहता है। वह सपने में भी मरीजों का नाम लेकर बडबडाती है। जब वह अपनी बच्ची के पास जाती है, लेकिन वहाँ भी उसका दिल लगता नहीं। उसे मरीजों की बार बार याद आती है। वह कर्तव्यदक्ष कुशल डॉक्टर है। नयी मरीजा के कागजात देखने के बाद उसे यह राज मालूम हो जाता है कि नयी मरीजा उसकी सौतन है। वह गुस्से की तैश में आती है। वह फैसला करती है कि वह अपनी सौतन का ईलाज एवं ऑपरेशन नहीं करेगी। लेकिन कुछ पल गुजरने के बाद उसका मन परिवर्तन हो जाता है। क्योंकि उसे अपना डॉक्टरी फर्ज प्यारा है। वह सारी रात जागती है। डॉक्टरी किताब पढ़ती है। उससे पहले डॉ. केशव का तार आया था कि उसकी बच्ची शशी गिर गयी है उसके दाहिने पैर की हड्डी टूट गयी है। उसे अपने बच्चे का खयाल आता है। वह किराये की टॅक्सी लेकर हवाई अड्डे पर जाती है। लेकिन उसे अपने फर्ज का एहसास होता है। वह वहाँ से अस्पताल वापस आती है। नयी मरीजा को नयी जिन्दगी देने के लिये माता रूप वह गौण मानती है। अपनी सौतन का ईलाज करते समय मतलब ऑपरेशन करते समय नयी मरीजा के जान लेने के विचार उसके दिल में पनपते हैं लेकिन पल दो पल गुजरने के बाद अनीला का मन परिवर्तन होता है वह संयम से काम लेती है। वह बड़ी कुशलता से, दिलोजान से सौतन का ऑपरेशन करती है। नयी मरीजा की जान बचाती है। वह दादा से कहती है, " (एकदम) दादा, मुझे अभी शशि के पास जाना है (शर्मा से) आप की पत्नी का ऑपरेशन सफल हुआ। वह जल्दी तगडी हो जाएगी। बधाई ! ... आओ केशव ! "[8]

ख) डॉ. मिसेज सईदा : (डॉक्टर)

डॉ. मिसेज सईदा " डॉक्टर " नाटक की गौण नारी पात्र है। वह डॉ. अनीला की प्रमुख

डॉ. विजय को बताती है, " इसलिए हो सकती है कि उसके जाने के बाद परिवार को कौन पालेगा ? दुधारू गाय को कोई नहीं बेचना चाहता। उसे जीने से रोकने के लिए वे किसी भी सीमा तक जा सकती है। "[9] बिन्दु के घर से राखी का दर्द का रिश्ता है। हमेशा हँसने हँसाने अनोखी अदा से वह जिन्दगी गुजारती है। उसके दिल में यह शक पनपता है कि नीलिमा लडक-भडक पसन्द करती है। शायद पूनम का संग उसे ललित लुडियो के भ्रम में ही कही होटल कैमिलो न पहुँचा दो। उसे यह पता चलता है कि पूनम कॉल गर्ल है। पुलिस ने " होटल कैमिलो " में छापा मारा। पूनम पकड़ी गयी लेकिन उसने तीसरी मंजिल से कूदकर आत्महत्या की। नीलिमा जब डॉ. जौहरी से मिलने जाती है लेकिन डॉ. विकास को यह खबर मिलते ही वे नीलिमा को राखी के घर भेजते हैं। राखी खबर मिलते ही नीलिमा का हाल देखने आती है। इसतरह राखी एक आदर्श, दरियादिल, संवेदनशील एवं ममतामयी नारी है।

3) कर्मचारी :

(प) सुनन्दा (कुहासा और किरण) :

डॉ. विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित " कुहासा और किरण " सामाजिक नाटक की सुनन्दा मुख्य नारी पात्र है। उसकी उमर 25-26 साल की है। वह व्यवहार कुशल, सुन्दर, स्पष्टवक्ता, सत्यप्रिय आदर्श नारी है। नाटक के प्रमुख पात्र श्री कृष्णचैतन्य है जो एक नम्बर के मुखबिर है। लेकिन राजनीतिक पीड़ितों को दी जानेवाली पेंशन लेते है। वे एक नम्बर के भ्रष्टाचारी नेता है। चेहरे पर चेहरा लगाते हैं। सुनन्दा उनकी प्रायव्हेट सेक्रेटरी है। नेताजी के जो जिगरी दोस्त है, संपादक बिपिन बिहारी और समाज सुधार अग्रवाल दोनों नेताजी पर आश्रित है। ये तीनों भ्रष्टाचारी हैं। सुनन्दा के दिल में नेताजी के प्रति इज्जत है। वह उनकी असलीयत से बेखबर है। सुनन्दा व्यवहार कुशल नारी है। संपादक सरकार से पाँच पत्रिकाएँ निकालते हैं। वे सरकार से कागज का ज्यादा कोटा लेते हैं लेकिन वह बहुत कम छपती है। सरकार की आँख में वे धूल झोंकते हैं। शेष कागज वे कालाबाजार से उमेशचंद्र अग्रवाल को बेचते हैं। सुनन्दा अहिस्ता अहिस्ता भ्रष्टाचारी नेता का राज जान जाती है। वह फूँकफूँक कर कदम रखती है। नेता कृष्णचैतन्य के षष्टी समारोह का आयोजन भी वह बड़ी कुशलता से करती है। ऐसी कुशल विद्वान सेक्रेटरी को पाकर नेताजी तो निहाल हो गये हैं। सेक्रेटरी के लिये जो गुण चाहिए वे सब उसमें निहित है। वह सर्वगुण संपन्न नारी है। वह भोले भाले अमूल्य को भी व्यवहार की बाते एवं तकनीक बताती है। उसका व्यक्तित्व सब को प्रभावित करता है। नेताजी तो अपना जन्म दिवस भूल गये थे। सब से पहले वह नेताजी को बधाई देती है। उनको पुष्पमाला पहनाती है। नेताजी को ताज्जुब हो जाता है। सुनन्दा दस दिन का अष्टिपूर्ति का आयोजन का ब्योरा पेश करती है। कृष्णचैतन्य खुश होकर कहते हैं कि हम तुम्हारा वेतन बढ़ायेंगे। समय सूचकता एवं

सहायिका डॉक्टर है। डॉ. अनीला की जिगरी सहेली भी है। वह भी कुशल डॉक्टर है। उसके चेहरे पर हमेशा आत्मविश्वास की झलक दिखायी देती है। डॉ. अनीला का उसपर पूरा भरोसा है। वह हँसमुख एवं समझदार युवती है। वह हर एक मरीज के साथ मीठे बोल बोलती है। उनसे प्यार का सलूक करती है। अपनापन से मरीजों की खिदमत करती है। डॉ. अनीला जब अपनी बच्ची शशि के पास जाती है तो उसकी गैर हाजिरी में वह सारा अस्पताल संभालती है। डॉ. अनीला के प्रति उसके दिल में इज्जत है। अनीला के बड़े भाई दादा को वह अपना भाई मानती है। नयी मरीजा जब अस्पताल में आती है। उसकी हालत बहोत खराब थी। लेकिन दादा को जब यह राज की बात मालूम हो जाती है कि नयी मरीजा अनीता की सौतन है। यह राज नर्स लीला जोसेफ से दादा को मालूम होता है। तो वे गुस्से की तैश में आकर नयी मरीजा को अस्पताल में दाखिल होने नहीं देते। लेकिन नयी मरीजा का हाल एवं दशा देखकर उसके दिल में रहम एवं दया पनपती है। वह नर्स लीला जोसेफ के जरीए दादा से विनंती करती है कि अगर उनकी आज्ञा हो तो वह नयी मरीजा को आठ दिन की दवा दे दी जाए। दादा का मनपरिवर्तन हो जाता है। वे उसे ईजाजत देते हैं। वह अपनी हैसियत से नयी मरीजा का दिलोजान से ईलाज करती है। डॉ. अनीला अस्पताल वापस आने के बाद नयी मरीजा के कागजात पर सतीशचंद्र शर्मा का नाम पढ़ती है तो उसे पूरा यकीन होता है कि नयी मरीजा उसकी सौतन है। अनीला गुस्से की तैश में आती है। वह नयी मरीजा को अस्पताल से निकालना चाहती है। तो उस वक्त बड़ी कुशलता से वह डॉ. अनीला को समझाती है। ऑपरेशन से पहले डॉ. अनीला जब अस्पताल से चोरी चोरी से रफूचक्कर होती है तो वह सब्र से काम लेती है नयी मरीजा का खुद डॉ. केशव की मदद से ऑपरेशन करना चाहती है। लेकिन डॉ. अनीला वापस आती है और ऑपरेशन करती है। डॉ. मिसेज सइदा कर्तव्यदक्ष कुशल डॉक्टर के रूप में चित्रीत हुयी है।

2) अफसर :

राखी (श्वेत कमल) :

" श्वेत कमल " नाटक की राखी गौण नारी पात्र है। वह अफसर एवं व्यवहारकुशल नारी है। उसकी उमर 32 साल की है। वह इक गरीब परिवार में पैदा हुयी थी। उसके माता पिता बिमार थे। पाँच बेटियों में उसका दूसरा नंबर था। गरीब परिवार में पलकर भी उसने बड़ी लगन से अभ्यास किया। शिक्षा प्राप्त की। आज वह अफसर बनी है। उसने अपनी बहनों को पढ़ाया, सिखाया। उनके हाथ पीले किये और बादमें उसने शादी की लेकिन होनेवाले पति से यह आदर्श किया कि माँ उसके साथ रहेगी। पति राजी हुये। आज राखी बनसँवर के बड़ी शान से दफ्तर जाती है। वह बिन्दु की सहेली है। आदर्श भारतीय नारी है। वह बिन्दु को समय समय पर दिलासा देती है। जीने के लिए उसका हौसला बढ़ाती है। वह बिन्दु के बारे में

कुशल चातुर्य उसके पास है। वह आदर्श सेक्रेटरी है। वह स्पष्टवक्ता एवं स्वाभिमानी नारी है।

(क) टगर : (टगर)

टगर जवाँन आकर्षक नारी है। पति ने उसे तलाक देने के बाद उसके दिल पर गहरी चोट लगी। फिर भी उसने सब्र से काम लिया। जिन्दगी के हँसीन मोडपर उसे ठाकुर साहब मिल गये। उन्होंने उसे अपनी प्रायव्हेट सेक्रेटरी बनाया। जिससे टगर की सारी जिन्दगी बदल गयी। उसका हौसला बढ़ गया। ठाकूर साहब की उमर 50-51 साल की है। वे बूढ़े है फिर भी शौकीन है। टगर सिर्फ उनकी प्रायव्हेट सेक्रेटरी नहीं तो माशूका भी है। टगर से जुदा होना उनके बस की बात नहीं। उब टगर उनका साया बन के ठाकूर साहब के साथ रहती है। दोनों जल्द ही शादी करनेवाले हैं। टगर ठाकूर साहब को उपना पति मानती है। टगर को इस बात की खुशी है कि ठाकूर के रूप में उसे समझदार पति मिला साथ ही साथ स्वतंत्रता मिली। वह अपनी मर्जी से जीती है। वह अपनी अपनी मनमानी करती है। दोनों एक साथ रहते हैं। आज टगर ने खूब साहित्य पढ़ा है। काफ्का, कामू और सार्त्र को भी उसने पढ़ लिया है। बाते करनी भी सीखी है। आज वह साहित्यिक पति को भी खरीद सकती है। ठाकूर साहब की प्राइव्हेट सेक्रेटरी बनने से उसकी पूरी जिन्दगी बदल गयी। उसके जीने का हौसला बढ़ गया। पराये मर्द के सामने भी टगर ठाकूर साहब से शरारत करती है। सारी दुनिया ये राज समझती है कि ठाकूर साहब ने टगर को भगाकर लाया है। लेकिन सच्ची पते की बात यह है कि वह सिर्फ उनकी मेहबूबा है। ठाकूर साहब लोक गीत इक्कठा करते हैं। वह ठाकूर साहब के इश्क में खो जाती है। टगर को पाकर ठाकूर साहब को ऐसा लगता है कि मानो टगर के रूप में उन्हें सारा जहान मिल गया है। बिना शादी के दोनों एक साथ हँसी खुशी से जिन्दगी गुजारते हैं। इक दुजे के लिए मर मिटने की लालसा दोनों के दिल में पैदा हो गयी है। ठाकूर साहब के बारे में टगर माथूर से कहती है, " (पत्ते उठाकर) जी हाँ, न जाने मुझपर क्या बीतती यदि ठाकूर साहब मुझे अपनी सेक्रेटरी बनाना स्वीकार करके उबार न लेते। मैं उनकी सेक्रेटरी बनकर आयी और अब पत्नी बननेवाली हूँ, वास्तव में माथूर साहब, ठाकूर साहब को मैंने ढूंढ निकाला है। "[10]

(ब) उषा टंडन : (श्वेत कमल)

" श्वेत कमल " नाटक की गौण स्त्री पात्र है। वह डॉ. विद्याधर जौहरी की प्रायव्हेट सेक्रेटरी है। वह जवाँन सुन्दर फॅशनपरस्त लडकी है। उसकी उमर 22-23 साल की है। वह डॉ. जौहरी की प्रायव्हेट सेक्रेटरी है। उससे पहले बिन्दु डॉ. जौहरी की प्रायव्हेट सेक्रेटरी थी। लेकिन जौहरी उसपर डोरे डालते हैं। उनकी नीयत बिगड़ी। कठपुतली समझकर वे उसे अपने ईशारेपर नचाना चाहते थे। लेकिन बिन्दु तो आदर्श भारतीय नारी है। अपनी इज्जत खतरे में पड़ जाने की शंका उसके दिल में पैदा हुयी उसने

नौकरी पर लात मारी। वह जगह खाली हुयी। अब सेक्रेटरी के पदपर उषा टंडन काम करती है। जौहरी के साथ उसके पुराने ताल्लुकात थे। उषा टंडन अपने बॉस का पत्र लेकर एवं बिन्दु की तनख्वाह लेकर बिन्दु के घर आती है। उसे यह भी बताती है कि दफ्तर के कर्मचारी बिन्दु की हिम्मत की दाद देते हैं। शोषण के बारे में उषा टंडन के विचार ऐसे है, " शोषण के साथ कीमत का कोई रिश्ता नहीं होता मिसेस पंजवानी। अन्दर की आवाज को मारकर ही शोषण किया जा सकता है। और आप मानेगी कि हम सब कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में उस आवाज को मारने के गुनहगार है। "[11]

वह बड़ी कुशलता से बिन्दु का हौसला बढ़ाती है, जाने से पहले वह बिन्दु से कहती है, " माफ कीजिए आपको बेकार परेशान किया। पहले ही क्या कम परेशान थी आप। लेकिन बहन जो समुन्दर में घुसना चाहते हैं उन्हें लहरों से जुझना आना ही चाहिए। समुन्दर बहुत बेरहम है ! किसी के साथ मुरव्वत नहीं करता। अच्छा नमस्कार ! नमस्कार मिसेज पंजवानी ! "[12] बिन्दु तो आदर्शवादी नारी है लेकिन दुनिया एवं दुनियादारी की बातें बताकर उषा टंडन उसका हौसला बढ़ाती है।

4) साहित्यकार :

प्रभा (कुहासा और किरण) :

" कुहासा और किरण " नाटक में जो प्रभा है वह निर्भीक साहसी एवं सृजनशील साहित्यकार है। वह जवाँन है। उसकी उमर पच्चीस साल की है। वह साँवली सलौनी है। उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली है। सुनन्दा उसकी सहेली है। जब उसे मालूम होता है कि आज नेता कृष्णचैतन्य का जन्मदिवस है तो वह आकर उन्हें बधाई देती है। अपने नये उपन्यास की कथा नेता को वह सुनाना चाहती है क्योंकि यह उपन्यास छपवा देने का वादा नेताजी ने किया था। नेता के पास समय नहीं था इसलिये वह कथा गायत्री देवी को सुनाती है। गायत्री देवी कहानी सुनकर खुश होती है। मालती की दशा देखकर उसे तरस आता है। मालती के पति डॉ. चंद्रशेखर के बारे में सारी बातें उसे मालूम होती है। यह राज जान जाती है कि नेता कृष्णचैतन्य एक नम्बर के गद्दार एवं भ्रष्टाचारी आदमी है। इस मुखाविर नेता कृष्णचैतन्य का भण्डा फोडने के लिए वह कहानी लिखकर प्रकाशित करना चाहती है। इस बारे में बातचीत करने के लिए वह संपादक के पास आती है। उनसे कहती है, " जी हाँ, यही बात है लेकिन इतनी ही नहीं है। मैंने अमूल्य की व्यथा को पास से देखा है। इधर मैं अनुभव कर रही हूँ कि मेरे भीतर कुछ मर गया है, कुछ जन्म ले रहा है। मैंने निश्चय किया है कि मैं अपने उपन्यासों की रूपरेखा को बदल दूँगी। समय और सीमाओं को लाँघनेवाले कालातीत पात्रों की सृष्टि मैं नहीं करूँगी। मैं मुखौटे लगाये मुखाविरों को, भ्रष्टाचारियों को, देश में फैले छद्म को बेनकाब करूँगी। "[13] उसे अमुल्य से यह भी पता चलता है कि नेता के जिगरी दोस्त संपादक और

अग्रवाल ये दोनों भी भ्रष्टाचारी है। अमूल्य के प्रति नेता के दिल में शक पैदा होता है वे उससे टेढ़ी चाल चलकर उसे जेल भेजते हैं। तो प्रभा गुस्से की तैश में आती है। वह नेता और संपादक को धमकाती है। नेता की पत्नी गायत्री देवी अपने पति की करतूत से खुदकुशी करती है। केस की छानबीन करने के लिये प्रभा सी.आई.डी. टमटा साहब को लेकर आती है। पत्र पढ़ने से नेता को आत्मग्लानि होती है। वे प्रभा की वजह से ही नेता, संपादक, अग्रवाल को टमटा गिरफ्तार करते जेल भेजते हैं। इसतरह प्रभा निर्भिक, स्पष्टवक्ता, साहसी एवं सृजनशील साहित्यकार नारी है।

5) परिचारिका / सेविका :

च) मिस लीला जोसेफ (डॉक्टर) :

" डॉक्टर " सामाजिक नाटक की वह गौण नारी पात्र है। वह डॉ. अनीला के अस्पताल में काम करती है। वह कर्तव्यदक्ष, सेवापरायणा नारी है। वह डॉ. अनीला के नर्सिंग होम में नर्स है। उसकी उमर 25-26 साल की है। उसका रंग साँवला है। उसके नयन नुकीले और मुखपर हमेशा चंचलता रहती है। अस्पताल में हर इक मरीज की वह दिलोजान से सेवा करती है। नयी मरीजा की हालत देखकर उसके दिल में दया पनपती है। नयी मरीजा का हाल वह दादा को बताती है साथ ही साथ मरीजा का पूरा पता बताती है। दादा को पूरा यकीन होता है कि नयी मरीजा यकीनन अनीला की सौतन है तो वे उसे अस्पताल से निकालना चाहते हैं। वह दादा से विनंती करती है कि वे नयी मरीजा को दाखिल करा दे। नयी मरीजा के प्रति उसके दिल में दया पनपती है क्योंकि नयी मरीजा की हालत बहुत खराब थी। डॉ. अनीला की हर इक बात वह सर आँखों पर मानती है। डॉ. अनीला यह राज जान जाती है कि नयी मरीजा उसकी सौतन है तो उसके तनबदन में आग ही आग लग जाती है। वह उसका ईलाज नहीं करना चाहती। बाद में डॉ. अनीला का मनपरिवर्तन हो जाता है। वह उसका ऑपरेशन करने के लिए राजी होती है। तो लीला जोसेफ के दिल में यह शंका आशंका पैदा हो जाती है कि शायद ऑपरेशन करते समय बदले की भावना से डॉ. अनीला नयी मरीजा का खून करेगी। डॉ. अनीला अपना मानसिक संतुलन खो बैठी है। तो वह बड़ी विनम्रता से डॉ. अनीला के पास आती है। और उससे कहती है, " (एकदम) माफ कीजिए, मैं एक नर्स हूँ, पर आपके प्यार के भरोसे हिम्मत कर रही हूँ।

अनीला : किस बात की ?

लीला : आप से एक बात कहने की।

अनीला : बोलो, तुम्हें क्या चाहिये ?

लीला : (एकदम) डॉक्टर ! आपकी तबियत बड़ी खराब है। आप वह ऑपरेशन न करें। "[14]

साक्षात लीला जोसेफ संवेदनशील ममतामयी कर्तव्यदक्ष नर्स है।

छ) काकी (डॉक्टर)

वह डॉ.अनीला की सेविका है। उसकी उमर साठ साल की है। वह डॉ.अनीला की सच्ची सेविका है। वह डॉ. अनीला को अपनी बेटी मानती है। अनीला के प्रती उसके दिल में ममता पनपती है। उसे हर पल डॉ. अनीला का खयाल रहता है। जब डॉ. अनीला का मानसिक संतुलन बिगड जाता है तो पग पर वह माँ की ममता से अनीला को समझाती है। काकी स्नेहपूर्ण और समझदार नारी है। वह बार बार डॉ. अनीला को समझाती है कि सबसे पहले अनीला अपनी तबीयत का खयाला करे। वह दिलोजान से डॉ. अनीला की खिदमत करती है। वह साक्षात ममता की मूर्ति है। स्नेहशील ममतामयी नारी के रूपमें काकी "डॉक्टर" इस नाटक में चित्रीत हुयी है।

6) मछुआरिन :

न) अम्मुकुट्टी (केरल का क्रांतिकारी)

अम्मुकुट्टी तो देशप्रेमी क्रांतिकारी साक्षात रणचण्डी नारी है। वेनुतम्पी दलवा तो उसे अपनी चेतना मानता है। फिरंगी और दलवा में घमासन युद्ध होता है। दलवा की हार हो जाती है। नगरकोविल की जंग में भी दलवा की हार होती है। अपने देश को बचाने के लिए दलवा अपने महाराज के पास जाकर उनसे विनंती करते हैं कि वे उन्हें बागी घोषित करें। दलवा को जिन्दा या मुर्दा पकडनेवाले को 5000/- रू का इनाम घोषित करते हैं। इनाम पाने के लिये वालन पिल्ले बेताब। पन्द्रह बीस सैनिक साथ लेकर बावन पिल्ले दलवा की तलाश करता है। अम्मुकुट्टी ने तो मछुआरिन का वेश परिधान किया था। वह दलवा के पास जाना चाहती है। उसे वह कुछ राज बताना चाहती है। मछुआरिन के वेश में जब अम्मुकुट्टी वहाँ से गुजरती है तो उसे देखकर बावन पिल्ले के दिल में यह शंका पैदा होती है कि मछुआरिन के वेश में यह अम्मुकुट्टी ही होगी। वह उससे कहता है, " ए तुम कौन हो ?

अम्मुकुट्टी (गिडगिडाकर) मैं तो मछुआरिन हूँ हुजूर।

वालन पिल्ले यहाँ क्या करने आयी है ?

अम्मुकुट्टी: (सआँसी होकर) हुजूर, मेरा छोटा बच्चा बहुत बीमार है, इस गाँव में एक बहुत अच्छे वैद्य है। उनसे दवा लेने जा रही हूँ। "[15]

बालन पिल्ले उसे छोड देता है। अपने पिया को संदेश एवं राज की बात पहुँचाने के लिए साहसी देशप्रेमी अम्मुकुट्टी खतरों से खेलती है। मछुआरिन का वेश परिधान करती है। इसी वेश में वह अपने पिया दलवा से मिलती है। अम्मुकुट्टी उसे लेकर विदेश जाना चाहती है। जिन्दादिल दलवा [illegible] नहीं होता।

[illegible] UNIVERSITY [illegible]PUR

अम्मुकुट्टी टूटे हुए दिल से दलवा को विदा करती है।

थ) मछुआरिन नं । और 2 (केरल का क्रान्तिकारी)

अपने देश को बचाने के लिए वेनुतम्पी दलवा महाराज के पास जाकर ये गुँजाईश करता है वे उन्हें बागी घोषित करे। दिलपर पत्थर रखकर महाराज टूटे हुए दिल से उसे बागी घोषित करते हैं; मजबूरी से वह भी ऐलान करते है जो व्यक्ति उसे जिन्दा या मुर्दा पकडवाने में मद्द करेगा उसे पाँच हजार ईनाम मिलेगा। जो उसकी मद्द करेगा उसे सजा-ए-मौत मिलेगी। बालन पिल्ले एक नम्बर का स्वार्थी एवं लाल्ची आदमी था। दलवा को पकडने के लिये, ईनाम पाने के लिए वह उतावला एवं बेताब है। वह उसकी तलाश करता है। वहाँ से मछुआरे गुजरते हैं। बालन पिल्ले के दिल में यह शक पैदा होता है कि शायद ये मछुआरे दलवा के बारे में जानते होंगे वह उन्हें धमकाता है। वह उनसे कहता है, " नहीं जानते तो अब जान जाओगे। सैनिको, गाँव में जाकर हर घर की तुलाशी लो। मछलियों के जाल में जरूर देखना (नारियों से) तुममें से कोई अम्मुकुट्टी तो नहीं है।

स्त्री नं । : कौन अम्मुकुट्टी। हमारे गांव में अम्मुकुट्टी नाम की दो वर्ष की एक बच्ची तो है।

बालन पिल्ले: बकवास बन्द करो। मैं उस अम्मुकुट्टी की बात कर रहा हूँ जो गा गाकर बगावत के लिए भडकाया करती थी।

स्त्री नं 2 : उसे हमने बहुत दिन से नहीं देखा। हममें से कोई अम्मुकुट्टी नहीं है। मेरा नाम एलियाम्पा है और इसका साराम्पा। हम दोनों ईसाई हैं। "[16]

ये देशप्रेमी मछुआरिने है। अम्मुकुट्टी एवं दलवा के प्रति उनके दिल में इज्जत है।

7) वेश्या

पूनम (श्वेत कमल) :

श्वेत कमल नाटक की पूनम इक सुन्दर आकर्षक 20-21 साल की जवाँन हसीना है। वह एकदम चकाचक, फॅशनपरस्त, जीन्स धारी आधुनिक लडकी है। नीलिमा उसकी जिगरी सहेली है। पूनम तो जवाँन है। जिस्म में जवानी मचलती है और जवानी दीवानी होती है। पूनम पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगी हुयी है। वह मॉडेल गर्ल है। चाँदी के चंद सिक्कों के लिए या कागज के नोटों के लिए अपनी छातियाँ और अपनी टाँगे दिखाती है। मॉडेल गर्ल वह बनी है। मॉडेलिंग में लोगों को प्रभावित करने के लिए अपनी छाती और टाँगे दिखाने में उसे संकोच नहीं होता। मानो वह स्वच्छंद नारी है। वह बड़ी कुशलता से नीलिमा को बताती है, " पता नहीं यार, बहुत से लोग बहुत सी बातें करते हैं। मैं अपनी बात कहती हूँ। कुछ लोग कहते हैं कि स्त्री को अपने शरीर को उघाडना नहीं चाहिए। पर मॉडेलिंग में तो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने

के लिए अपनी छातियाँ और टाँगे दिखानी बहुत जरूरी है। मुझे तो ऐसा करने में जरा भी बुरा नहीं लगता। "[17]

उसका विचार है कि यह चोरी नहीं तो खुला व्यवसाय है और जो खुला है वह बुरा नहीं होता। बुरा परदा होता है। पापी पेट का सवाल हल करने के लिए वह मॉडेल गर्ल मतलब प्रतिदर्श नारी बनी है। उपर से वह शराब भी पीती है। मस्ती में मस्त और नशे में चूर होकर लडखडाती हुयी अपने घर आती है। सारे गली के लोग यह तमासा देखते हैं। राज की बात यह है कि मॉडेलिंग करते करते वह कॉल गर्ल बन जाती है। अपनी मर्जी से खुदगर्जी से जिन्दगी जीती है। वह भोलीभाली नीलिमा उससे प्रभावित होती है और उससे कहती है, " तू सचमुच भाग्यशाली है पूनम।

पूनम : छोड यार भाग्य को। अपन तो अपने बूतेपर जिन्दगी का लुत्फ उठाते हैं। (धीरे से) सुन ! पास आ ! स्टुडिओ जाना तो बहाना है। मैं तो अक्सर होटल कैमिलो जाती हूँ।

नीलिमा : (चकीत) होटल कैमीलो ? वहाँ क्या है ?

पूनम : वहाँ सब कुछ है यार, सुन एक रात के एक हजार तक मिल जाते हैं। "[18] पैसों के लिए वह अक्सर " होटल कैमिलो " में जाकर अपने जिस्म का सौदा करती है। अपनी इज्जत बेचती है। और रंगरलीयाँ मनाती है। इन पैसों से शान से रहती है। वह चरित्रहीन नारी है। उसकी नजर में पैसा ही सब कुछ है। ऐय्याशी के लिए पैसों की हवस के लिए वह मॉडेल गर्ल से कॉल गर्ल बनी है।

आ) विद्रोही नारी पात्र :

नारी की एक विशेषता यह रही है कि वह जितनी सरल और ममतामयी है उतनी ही वह प्रसंगवश विद्रोही बन जाती है। उसके जीवन में कुछ ऐसी घटनाएँ घटीत होती है कि जिनकी वजह से वह अपना विद्रोही रूप धारण करती है। यह विद्रोह कभी पारिवारिक जीवन के प्रति है तो कभी उसके उपर हुए जुल्म के प्रति।

य) भारती (गान्धार की भिक्षुणी) :

भारती जवॉन सुन्दर नारी है। उसकी नाक चपटी है। लेकिन उसके व्यक्तितत्व में एक आकर्षण है। ममतामयी, विद्रोही नारी के रूप में उसे चित्रीत किया गया है। " गान्धार की भिक्षुणी " नाटक की वह गौण पात्र है। हूण सरदार ने आनन्दी पर बलात्कार किया। आनन्दी खुदकुशी करना चाहती थी लेकिन राजा यशोधर्मन ने उसका मनपरिवर्तन किया। कुछ दिन गुजरने बाद उसने एक बच्चे को जन्म दिया। उस अनचाहे बच्चे को वह पाप की निशानी मानती है। तक्षशिला की भिक्षुणी के हाथ वह इस नवजात शिशु को सौंपती है। यशोधर्मन के कहनेपर इस बच्चे मतलब गौरव को लेकर भारती आनन्दी के पास आती है। गौरव

को पाकर आनन्दी निहाल होती है। देखा जाए तो भारती हूण जाँति की लड़की है। लेकिन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को वह दिलोजान से चाहती है। वह विद्रोही बनती है। कवि वस्तुमित्र से शादी करती है। हूणों ने जो मनमाने अत्याचार मालव वासियोंपर किये यह देखकर उसे हूणों से सख्त नफरत होती है। कवि वस्तुमित्र से बड़े प्यार से उसका नाम भारती रखा था। वह विद्रोहिणी है। अपने पति के रंग में रंग गयी है। मालती के सूर में सूर मिलाकर देशभक्ति एवं देशप्रेम के गीत गाती है। भारती " गान्धार की भिक्षुणी " आनन्दी को माँ कहकर पुकारती है। आनन्दी के शव से लिपट लिपट कर आलाप विलाप करते हुये कहती है, " मेरी जन्म जन्म की गुरू, मेरी माँ ! मैं अब कैसे जिन्दा रहूँगी ? "[19]

मानो आनन्दी के चले जाने से उसकी दुनिया उजड़ गयी।

र) मनीषा (टूटते परिवेश) :

" टूटते परिवेश " नाटक में " मनीषा " है वह इस नाटक की गौण नारी पात्र है। उसकी उमर 25-26 साल की है। वह एक जवाँन, सुन्दर एवं हँसमुख नारी है। वह करूणा और विश्वजीत की दो नम्बर की बेटी है। वह कॉलेज में प्रोफेसर है। इसके वस्त्र सुरूचिपूर्ण है। वह सर से लेकर पाँवतक मैचींग करती है। वह एक नम्बर की फैशनेबल लड़की है। वह जिस कॉलेज में लेक्चरर है उसी कॉलेज में " किस्टोफर " नाम के प्रोफेसर से वह प्यार करती है। वह उससे शादी करना चाहती है वह उसके ईश्क में मानो पागल बनती है। जिस्म में जवानी मचलती है और जवानी दिवानी होती है। परिवार की कुल परम्परा को मिट्टी में मिलाकर जाँति पाँति के सारे बन्धन को ठुकराकर वह घर से जुदा होकर चोरी, चोरी से किस्टोफर से शादी करती है। दुनिया एवं दुनियादारी की वह परवाह नहीं करती। अपनी अपनी मनमानी करती है। ऐसा करने से माता पितापर क्या गुजरेगी इसका उसे अहसास नहीं होता। जाने से पहले दर्शकों को देखकर वह कहती है, " कोई नहीं है। मैं जा सकती हूँ। आप पूछ सकते हैं, मैं हूँ कौन ? कहाँ जा रही हूँ ? यही तो घर की समस्या है। यही आप जानना चाहते है। मैं पूछती हूँ कि क्या मैं आपको इतनी नादान दिखाई देती हूँ कि अपना भला-बुरा न सोच सकूँ, अपनी इच्छा से कहीं आ जा न सकूँ, जो ठीक समझूँ वह कर न सकूँ ? (वाणी से गर्विला विश्वास उभरता हूँ) जी नहीं, मैं अपना मार्ग आपको चुनने का अधिकार नहीं दे सकती, कभी नहीं दे सकती। मैं जा रही हूँ, वही जहाँ मैं चाहती हूँ। आप चाहे तो इसे पाप कह सकते हैं, विद्रोह भी कह सकते हैं। भाषा का दुरूपयोग करने से कौन किस को रोक सका है ! लेकिन मैं तो इसे अधिकार कहती हूँ, अपने भाग्य का अपने आप निर्णय करने का अधिकार। मैं इस अधिकार के लिए ही यह घर छोड़कर जा रही हूँ। "[20] जाने से पहले कुछ दिन पहले यह राज जब मालुम हुआ था तो माँ ने उसे बड़ी कुशलता से समझाने का प्रयास किया था लेकिन स्वच्छंदी एवं विद्रोही मनीषा टस से मस

नहीं हुयी। वह अपने फैसले पर अडीग रही। घर से भागकर वह किशोकर से शादी करती है।

ल) शान्ता (अब और नहीं) :

" अब और नहीं " नाटक की शान्ता सरल, त्यागमयी पतिपरायणा एवं आदर्श नारी है। पति वीरेन्द्र प्रताप जो गृहस्वामी है उनका घरपर गहरा दबाव है। परिवार की हर व्यक्ति दबावग्रस्त है। शान्ता एक कलकारा थी। उसे सितार का बेहद शौक था। सितार ऐसा कुशलता से बजाती सुननेवाले निहाल होते। पेंटिग्ज की वह शौकीन थी। और साक्षात अन्नपूर्णा थी ऐसा खाना पकाती कि लोग बड़ी चावसे खाते। लेकिन ससुराल आने के बाद सितार बजाते समय साँस ने उसे टोक दिया, साँस का यह सलूक देखकर उसके दिलपर गहरी चोट लग गयी। पति भी उसे कठपुतली समझकर अपने ऊँगली पर मनमाने नचाते। पति का उसपर इतना गहरा दबाव था कि वह पति की हाँ में हमेशा हाँ मिलाती। इसका असर यह हुआ कि वह मानसिक रोगिणी बनी। उसका ईलाज करने के लिए मानसिक रोग तज्ञ डॉ. मलिक आते हैं। उससे पहले उसके पति नये घर का नक्शा उसे दिखाते हैं तो उसका दबावग्रस्त मन उत्तेजित होकर विद्रोह करता है। वह साफ साफ कहती है कि न उसे मकान पसन्द है और न मकान का नाम पसन्द है। सारी जिन्दगी आजतक वह दबाव में जीती रही लेकिन इसके बाद वह किसी के दबाव में नहीं रहना चाहती। बन्धन को ठुकरायेगी। किसी की बात न मानकर अपनी मर्जी से जीना चाहती है। उसकी तबीयत खराब होती है, शान्ता कहती है, " मैं जानती हूँ तुम पढ़ चूके हो। कुछ गलत लिखा है मैंने ? मैं अब मुक्ति चाहती हूँ। मुझे मुक्ति दो, तुम सब लोग मुझे मुक्ति दो "[21] (कहते कहते उठ खड़ी होती है और वापिस लौट चलती है।) परिवार को लोग उसे पागल समझते हैं। लेकिन दबावग्रस्त नारी शान्ता विद्रोही बनती है। सारे बन्धन तोडकर वह घर से निकल जाती है। वह विद्रोहिनी बनती है। उसे बेहद खुशी होती है। उसका कहना है " .... बन्धन तो मृत्यु है, जीवन नहीं। लेकिन हम है कि कि मृत्यु को ही जीवन मानकर जीते रहते हैं। मैं बन्धन मुक्त होकर जीना चाहती हूँ इसीलिए ... "[22]

इसतरह दबावग्रस्त नारी सारे बन्धन तोड़कर घर से जब जुदा होती है तो उसे बेहद खुशी होती है। अलौकिक सुख मिलता है। खुद को मुक्त महसूस करती है। उसे सच्चे आनंद की अनुभूति होती है।

व) सुनन्दा (कुहासा और किरण) :

" कुहासा और किरण " नाटक की सुनन्दा नेता श्री कृष्णचैतन्य की प्रायव्हेट सेक्रेटरी है। वह व्यवहार कुशल स्पष्टवक्ता एवं स्वाभिमानी नारी है। मालती इक गरीब बदनसीब पचास साल की दुखियारी नारी है। मालती के पति देश की आजादी के लिए जेल गये। तपोदिक लेकर घर आये। एक दिन घुट घुट के मर गये। बेचारी मालती को फिर भी पेंशन नहीं मिली। पेंशन की कागजात पर उसे नेताजी के दस्तखत

चाहिए। बड़ी आशा से वह नेता के पास आती है। नेता उसे जलील करते हैं। यह सारा किस्सा जब सुनन्दा को मालूम हो जाता है वह यह राज की बात जान जाती है। मालती के देशप्रेमी पति का नाम चंद्रशेखर था। लेकिन नेता ने गद्दारी की, वे मुखबिर बने। जिसका असर यह हुआ कि डॉ. के चंद्रशेखर जेल गये। उन्हें कड़ी सजा हुयी। अंत में मर गये। उनके साथ गद्दारी करनेवाले नेता कृष्णचैतन्य ही है। मालती को नेताजी के कागजात पर दस्तखत चाहिए। फिर उसे पेंशन मिल सकती है। नेताजी उसे जलील करते हैं। असल में मालती की पेंशन वे ही लेते थे। इस भ्रष्टाचारी नेता का भण्डा फोडने के लिए सुनन्दा विद्रोही बनती है। यह सारी कहानी लिखकर वह प्रकाशित करना चाहती है। संपादक बिहारी के पास जाकर सुनन्दा उनसे कहती है, " वह सब मैं जानती हूँ पर क्या आप समझते हैं कि बात इतनी ही है ? क्या आपको अब भी पता नहीं लगा कि श्री कृष्णचैतन्य वह नहीं है जो दिखायी देते हैं ? वह मुखौटा लगाये एक देशद्रोही है। "[23] संपादक और समाज सुधारक भी भ्रष्टाचारी है उनको भी वह टकासा जवाब देती है। वह नेताजी का मुखौटा उतारना चाहती है। इन्साफ की आवाज उठाकर दुनिया को नेता का असली रूप बताना चाहती है। यह नारी अबला नहीं तो सबला है। नेताजी भोले भाले अमूल्य के साथ गहरी चाल चलते हैं। उसे अपने जाल में फँसाकर उनपर चोरी का इल्जाम लगाते है। तो वह चिल्ला चिल्ला कर नेता से कहती है, " (तीव्र स्वर), कर सकते हो तो कर दीजिए। लेकिन एक बात सुन लीजिए। मुझे खरीद नहीं लिया है आपने। न ऐसा कुछ सौंपा था मुझे जिस को लेकर चोरी का इल्जाम लगाया जा सके। फिर भी लगा देखिये। लेकिन मेरी आवाज तब भी बन्द न होगी। मैं पुकार पुकार कर कहूँगी कि आप सब भ्रष्ट हैं, नीच हैं, देशद्रोही है। आज नहीं तो कल आपको समाज के सामने जवाब देना होगा। जा रही हूँ, साहस हो तो रोक लीजिये .... "[24]

इस तरह नेता को धमकाती है। भ्रष्टाचारी नेता की नौकरी पर लाथ मारती है। क्योंकि वह स्वाभिमानी एवं स्पष्टवक्ता नारी है। उसे अपना जमीर दिलोजान से प्यारा है। भ्रष्टाचारी पति के सलूक से गायत्री देवी भी परेशान होती है। सुनन्दा नेता की पत्नी गायत्री देवी को यह बताती है कि अमूल्य पर झूठा इल्जाम लगाके नेता ने उसे हवालात में बन्द किया। गायत्री देवी कौरन उसे देखने जाती है लेकिन रास्ते में अक्सीडेंट हो जाता है। गायत्री देवी मर जाती है। यह अक्सीडेंट नहीं तो गायत्री देवी की खुदकुशी थी। इसका पता उनकी चिठ्ठी से लगता है। पत्र पढ़ने से नेता कृष्णचैतन्यजी को आत्मग्लानि होती है। सी.आई.डी. अफसर टमटा साहब के सामने वे अपने सारे अपराध कबूल करते हैं। टमटा उन्हें, संपादक, अग्रवाल को गिरप-तार करते हैं। जेल लेकर जाते हैं। इसतरह सुनन्दा ने नेताजी की कलई खोल दी। वह व्यवहार कुशल विद्रोही नारी है। सुनन्दा के कारण मालती की पेंशन को एक साल लगेगा। तो सुनन्दा कहती है, " हाँ चीखना पड़ता है। मैं भी चीखूँगी। हर उस अन्याय के विरूद्ध चीखूँगी, जिसे सहने के लिए हमें

विवश किया जाता है। चलो मैं तुम्हारे साथ हूँ। चलो चलो माँजी : "[25]

इ) स्वच्छंद नारी पात्र :

स्वच्छंदता नारी की अपनी एक विशेषता है। स्वतंत्रता के नाम पर चलनेवाली आज की नारी स्वतंत्रता या आदर्शवादी अर्थ भूलकर स्वच्छंदी बन जाती है। वह किसी के जोर जबरदस्ती को नहीं मानती बल्कि व्यक्तिगत जीवन को ही सब कुछ मानकर जिन्दगी गुजारती है।

प) टगर (टगर) :

टगर इक जवान हँसीन नारी है। उसकी उमर 25-26 साल की है। वह अत्यंत रूपवती नहीं है फिर भी वह बेहद आकर्षक नारी है। उसकी चितवन में कशिश है। उसके शबान से सारे प्रभावित होते हैं। इस फॅशन परस्ती के जमाने में वह ऐसा लिबास पहनती है, ऐसी अनोखी अदा से बातें करती है कि लोग मोहित होते हैं। मानो वह जिन्दादिल नारी है। जिन्दगी तो जिन्दादिल का नाम है। लेकिन वह तलाक शुदा नारी है। अभी वह ठाकूर साहब की सेक्रेटरी बनी है बिना शादी के दोनों एक साथ रहते हैं। और दोनों ये बहाना करते हैं कि जल्द ही वे दोनों शादी करनेवाले हैं। ठाकूर साहब बूढ़े है फिर भी शौकिन एवं रंगीले रतन है। " टगर " यह नाम उसे ठाकूर साहब ने ही दिया था। ठाकूर साहब को पाकर टगर फूले नहीं समायी क्योंकि ठाकूर के रूप में उसे समझदार पति मिला। साथ ही साथ पूरी आजादी मिली। वह तो स्वच्छंद नारी है। वह अपनी अपनी मनमानी करती है। वे दोनों नाजिम साहब के बंगले में ठहरे हैं। वहाँ ताश खेलने के लिए माथूर साहब आते हैं। माथूर पी.डब्ल्यू.डी. के सब डिवीजनल ऑफिसर है। टगर का रंग रूप देखकर वे मानो पागल बन जाते हैं। टगर को पाने के लिए वे बेताब हो जाते हैं। जिन्दगी में वे भी अकेले थे। उनकी पत्नी उन्हें पसन्द नहीं थी। वे एक नर्स से प्यार करते थे। लेकिन जब से टगर को देखा तब से वे टगर के दिवाने हो गये। नाजिम साहब टगर और ठाकूर साहब को जब घर से निकालते हैं तो माथूर साहब उन्हें अपने बंगले में सहारा देते हैं। ठाकूर साहब असल में भ्रष्टाचारी है। वे तस्कर व्यापारी थे। अन्तर्राष्ट्रीय दल के वे प्रभावशाली सदस्य थे। ठाकूर साहब का यह असली रूप स्वच्छंदी टगर माथूर को बताती है। माथूर नाजिम साहब को यह राज बताते हैं। नाजिम साहब के ईशारे पर मेजर पुरी ने तस्कर व्यापारियों के दल को पकड लिया। उनमें ठाकूर साहब भी शामिल थे। उन्होंने मुकाबला किया। मेजर पुरी ने उन्हें गोली से उडा दिया। वे मर गये। ठाकूर की हत्या की खबर सुनकर भी यह स्वच्छंदी, मनमौजी टगर टस से मस नहीं होती। टगर की यह गहरी चाल थी जिस की वजह से ठाकूर साहब मारे गये। माथूर साहब का तबादला मंजूरब हो जाता है। माथूर और टगर दोनों हँसी खुशी से एक साथ रहते हैं। माथूर साहब भी भ्रष्टाचारी है। वे ठेकेदारों से चोरी-चोरी से रिश्वत लेते हैं। यह राज की बात टगर

जान जाती है। माथूर को खुश करने के लिये वह बड़ी सुरीली आवाज में गजल भी गाती है। माथूर को जल्द ही प्रमोशन मिलने वाला था। दोनों जल्द ही शादी करके इस गाँव को छोड़कर दिल्ली जाने वाले थे। लेकिन स्वच्छंदी टगर भ्रष्टाचारी माथूरका राज जाकर नाजिम साहब को बताती है। जिसका असर यह होता है कि नाजिम साहब के कहने पर मेजरपुरी माथूर साहब को गिरप-तार करते हैं। टगर माथूर से उब गयी। इसलिए उसने माथूर से गद्दारी की। टगर तो स्वच्छंद नारी थी। नाजिम साहब भी टगर के ईश्क में पागल होते हैं। टगर अब नाजिम साहब के साथ रहती दोनों जल्द ही शादी करनेवाले थे। बातो बातों में नाजिम साहब टगर को राज की बात ये बताते है क वे शादी शुदा है लेकिन उनकी पत्नी के मृत्यु का कारण वे स्वयं थे। दोनों के मन का मिलन नहीं हुआ था। इस मिलन का अभाव उसकी मृत्यु का कारण बना। नाजिम साहब दो घण्टों के बाद टगर से रजिस्ट्रेशन शादी करनेवाले हैं। शालीमार होटल में पार्टी का आयोजन किया गया है। टगर को उससे पहले पता चलता है कि नाजिम साहब ने जान बूझकर टगर के पहले पति शेखर को बुलाया है ताकि टगर को जलील एवं बदनाम करने के लिए। डाक्टर की पत्नी विमला उसे यह राज बताती है। स्वच्छंदी टगर का मनपरिवर्तन हो जाता है। टगर का दिल और अगरबत्ती के समान महकता है वह सोचती है कि शादी के बाद नाजिम साहब को टगर का भूत याद आयेगा जिस से टगर के प्रति उनके दिल में शक पैदा होगा। घर का सुख चैन सब नष्ट हो जायेगा। पति मतलब शकी बनेंगे। टगर फैसला करती है कि अब और वह किसी को नहीं फँसायेंगी। उसे अपनी करनी पर पछतावा होता है। पुरूष जाँति से बदला लेने के लिये उसने ठाकुर को फँसाया। माथूर की आँखों में उसने धूल झोंकी। अपनी स्वच्छंदी वृत्ति के कारण उसने ऐसा बर्ताव किया। लेकिन शेखर के प्रति अब भी उसके दिल में प्यार है।

फ) दीप्ति (टूटते परिवेश) :

" टूटते परिवेश " सामाजिक नाटक की दीप्ति गौण नारी पात्र है। स्वच्छंद लडकी के रूप में इसे यहाँ चित्रीत किया है। दीप्ति इक जवाँन लडकी है। वह कमसीन लडकी है। वह तंजेब का कुर्ता, उसपर आधी बाँह का लाल स्वेटर और पीली बेल बॉटम, पैरों में पाजेब पहने हैं। उसके बाल मुक्त है। हमेशा हाथ में कंघा लेकर बार बार बाल सँवारते हुयी वह घुमती दिखायी देती है। वह अभी बालिग नहीं हुयी है। उसकी बहना मनीषा घर से भागकर चोरी चोरी से किस्टोफर से शादी करती है। जब दीप्ति को यह खबर मालूम होती है तो वह फूले नहीं समाती। वह " दीदी जिन्दाबाद – दीदी जिन्दाबाद के नारे लगाती है। दिवाली के अवसरपर लक्ष्मी पूजा भी उसे पसन्द नहीं वह इस विषय को लेकर अपने माता पिता की हँसी उड़ाती है। देशी सभ्यता एंव संस्कृति, रस्म एवं रिवाज उसे पसन्द नहीं। वह घर से सख्त नफरत करती है। उसका इस घर में दम घुट जाता है। वह भी घर से मुक्त होना चाहती है। सारा परिवार तो मनीषा

के समान बिखर गया है। उसका दिल भी विद्रोह करने के लिए मचलता है। लेकिन अभी वह वयस्क नहीं हुयी है। घर से जुदा होकर छात्रावास में जाकर रहती है। अपनी अपनी मनमानी करना चाहती है। इतमीनान से सिगार पीती है। मानो पश्चिमी सभ्यता के रंग में वह रंगी हुयी है। दोस्तों के साथ ज्यादा देर तक बड़ी शौक से घुमती रहती है। विवेक भी जब अपनी माशूका के साथ विदेश यात्रा पर निकल जाता है तो वह भी घर से मुक्त होने के लिए बेताब हो उठती है। वह भी अपनी मर्जी से शादी करना चाहती है। सारे परिवार से परेशान होकर उसके पिताजी खुदकुशी करने के लिए घर से निकल जाते हैं। खबर सुनकर वह घर आती है। चारो तरफ अंधेरा छा गया फिर भी पिताजी वापस नहीं आते। लेकिन फिर भी दीप्ति टस से मस नहीं होती। ठहरने के लिए उसके पास समय नहीं वह अपनी माँ से कहती है, " (सामान बटोरती हुयी) कहीं भी जानी की जरूरत नहीं है। वे आप ही चले आयेंगे। हाँ, ममा तुम चिन्ता मत करो। अब जाने दो। देर हो गई तो होस्टल के फाटक बन्द हो जायेंगे। (पास आकर) परसों जरूर आऊँगी। (हँसती है) आप सब लोग भी आइए। याद है न ? मेरा जन्म दिन है परसों, मैं बालिग हो जाऊँगी, यानी स्वतंत्र (भावाकुल) ओह, स्वतंत्र होना भी कितनी अच्छी बात है न। है न ? "[26] इसतरह वह जिद्दी, मनचली, स्वच्छंदी आधुनिका लडकी के रूप में चित्रीत हुयी है।

ब) अन्विता (युगे युगे क्रान्ति) :

युगे युगे क्रान्ति नाटक में जो अन्विता है। यह जवान एवं खुबसुरत लड़की है। वह प्रदीप और जैनेट की लाडली बेटी है। वह जिद्दी, मनचली, स्वच्छंदी लडकी है। वह अपनी मर्जी से शादी करना चाहती है। साथ ही साथ वह पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगी हुयी है। माता पिता उसकी शादी दीपक से करना चाहते हैं। दीपक से अन्विता प्यार करती है। दीपक यौरोप से लौट आने के बाद यह शादी होनेवाली थी। लेकिन अन्विता चंचल लडकी है। वह गिरगीट के समान रंग बदलती है। अन्विता चंचल लडकी है। जाँति पाँति के सारे बन्धन तोड़कर, खानदान की कुल परम्परा को मिट्टी में मिलाके वह अब नेल्सन से शादी करना चाहती है। उसने इस शादी के बारे में माता पिता को कुछ बताया भी नहीं था। एकदम सीधे निमंत्रण पत्र भेज दिया। निमंत्रण पत्र पढ़कर माता पिता निराश होते हैं। वह शादी करके अपनी माता पिता के पास आती है। और कहती है, " देख लो ममी, तुमने याद किया और मैं आ गयी। फिर न कहना कि मैं तुम से प्यार नहीं करती। (हँसती है) लेकिन मैंने तो सुना है आप मुझ से बहोत नाराज है। हमारे विवाह में भी शामिल नहीं हो रहे हैं। (नाटकीय निःश्वास खींचकर) आपकी इच्छा है। नेल्सन तो यही चाहता है कि .... "[27]

वह स्वच्छंदी लडकी है। उसके विचार है जब तक निभेगी तब तक नेल्सन के साथ रहेगी। जिस क्षण चाहेगी उससे अलग होगी। आसमान की गोद में उडनेवाले आझाद पंछी के समान वह है।

ई) अत्याधुनिका नारी पात्र :

आज की भारतीय नारी भारत में बसकर भी पाश्चात्य विचारों की शिकार बन गयी है। पाश्चात्य क्रिया कलापों का उसपर इतना असर पड़ा है कि वह अपना आदर्श रूप गायब करके पाश्चात्य फूहड़पन को ही प्रदर्शित करती है। उसकी ये प्रदर्शन बाजी उसके जीवन के विविध स्तरों ने सहज ही दिखायी पड़ती है।

क) रीता (युगे युगे क्रान्ति) :

यह एक जवाँन हँसमुख और सुन्दर नारी है। वह अनिरूद्ध से प्यार करती है। अनिरूद्ध प्रदीप और जैनेट का जवाँन जिन्दादिल बेटा है। रीता अनिरूद्ध की प्रेमिका है। उसके पिता बंगाली है और माँ डच है। रिता आधुनिक नारी है। वह पश्चिमी तौर तरीके अपनाती है। वह पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगी हुयी है। रीता और अनिरूद्ध दोनों शादी नहीं करना चाहतें। जब तक बनती है तब तक एक साथ रहेंगे। जिस दिन उसकी नहीं निभेगी उस दिन अलग होंगे। रीता शादी को बन्धन मानती है। उसके लिए शादी अबादी नहीं तो बरबादी है। उसे दुनिया एवं दुनियादारी की परवाह नहीं। बिना शादी के अनिरूद्ध की मेहबूबा बनकर अनिरूद्ध के साथ रहेगी। जब उसका दिल उब जायेगा तब वह अनिरूद्ध से अलग होगी। जैनेट और रीता का यह वार्तालाप देखिए, – " स्त्री सदा स्त्री है। पीढ़ियाँ उसके स्वभाव में परिवर्तन नहीं कर सकती। हमारे पूरखे मूर्ख नहीं थे। लाखों वर्षों के अनुभवों के बाद उन्होंने विवाह संस्कार को स्वीकार किया था। संगिनी रखना तो ऐसे ही हुआ जैसे कोई रखैल रख ले।

रीता : (कानोंपर हाथ रखकर) ओह गॉड ! आपके विचार कितने दाकियानूसी है। मैं कहती हूँ मुझे अनिरूद्ध अच्छे लगते हैं। मेरा मन उनके साथ रहने को करता है। मैं रहती हूँ। जब तक हम एक दूसरे को प्रेम कर सकेंगे रहेंगे। नहीं कर सकेंगे तो अलग हो जायेंगे। "[28] अनिरूद्ध के मतानुसार विवाह स्त्री के लिए गुलामी का पट्टा है। वह बन्धन है। यह सब देखकर अनिरूद्ध के पिताजी गुस्से की तैश में आते हैं। रीता उनके आमने सामने खड़े होकर खुल्लम खुल्ला बताती है, " हम लोग आत्मा को मानते ही नहीं। फिर उसके धिक्कारने का प्रश्न कहाँ उठता है। प्रदीप और जैनेट बड़ी कुशलता से समझाते हैं लेकिन ये पागल प्रेमी टस से मस नहीं होते। रीता के विचार देखिए, " ओह माई गॉड ! आपको भविष्य की बड़ी चिन्ताहै। लेकिन हमें नहीं है। हम स्वयं उसके निर्माता है। हम नहीं चाहेंगे तो सन्तान कैसे हो जाएगी ? और जब चाहेंगे तो उसने वर्तमान पर अपने अतीत को नहीं लादेंगे। "[29]

इसतरह रीता एकदम फॅशनपरस्त, पश्चिमी सभ्यता में रंगी हुयी आधुनिक नारी है।

ख) माधुरी (टगर) :

माधुरी " टगर " नाटक की गौण नारी पात्र है। माधुरी अत्यन्त आधुनिका है। उसका रंग गोरा और नाक तीखे हैं। सर से लेकर पाव तक उसने मेर्कीग किया है। वह बेहद सुन्दर है। उसकी उमर 20 साल की है। वह महान साहित्यकार शेखर के साथ बिना शादी के रहती है। दुनिया की उसे परवाह नहीं। उसका व्यक्तित्व ऐसा है जिससे सारे प्रभावित होते हैं। माधुरी एकदम मॉडर्न है। वह आधुनिक सभ्यता के रंग में रंग गयी है। पश्चिमी सभ्यता को अपनाती है। देखा जाय तो वह टगर की मानो सौतन है। शेखर माधुरी से प्रभावित हुए और इसका असर यह हुआ कि उन्होंने टगर को तलाक दिया। माधुरी शराब भी पीती है। उसकी आवाज में भी खुदाई जादू है। उसके बात करने का ढंग ही कुछ अलग है। शेखर उसे अपने दिल की धडकन मानता है। वह भी शेखर को दिलोजान से चाहती है। दोनों नाजिम साहब के यहाँ आये थे। उनको नाजिम साहब ने बुलाया था। नाजिम साहब जब उससे पूछते हैं कि, " (माधुरी से) और आप ? क्षमा कीजिये, मैं आप को कुमारी कहूँ या श्रीमती ?

माधुरी : कुमारी कहना ही ठीक रहेगा, नाजिम साहब ! मेरे लिए आप वहीं मंगवा दीजिये जो शेखर पियेंगे। '[30]

इसतरह शराब पीने से भी वह नहीं हिचकिचाती। एकदम फॅशनपरस्त नारी है। बिना शादी के वह शेखर के साथ रहती है। न उसे दुनिया की परवाह है और न दुनियादारी की। महफिल में सब के सामने यह राज की बात बताती है कि शेखर रश्मि वर्मा के पति है। और वह रश्मि वर्मा स्वयं टगर है। तो माधुरी परेशान होती है। टगर दोनों को खाने की दावत देती है। लेकिन शेखर माधुरी को लेकर निकल जाता है।

उ) परित्यक्ता नारी पात्र :

यद्यपि नारी शादी शुदा होकर अपने पति के साथ अच्छा जीवन बिताना चाहती है। फिर भी कुछ बातें ऐसी घटित होती है कि पुरूष के दबाव से या पुरूष की स्वच्छंदी वृत्ति से नारी को पति से अलग होना पड़ता है। या पति उसे अलग कर देता है। यह अलगाव परित्यक्त नारी के रूप में नाटककार ने यथार्थवाद के धरातल पर अंकित किया है।

च) डॉ. अनीला (डॉक्टर) :

आज डॉ. अनीला एक कर्तव्यदक्ष कुशल डॉक्टर है। हर इक की जुबॉन पर आज उसका ही नाम है। लेकिन डॉक्टर बनने से पहले वह गाँव की गँवार मधुलक्ष्मी थी। उसकी शादी सतीशचंद्र शर्मा से हुयी। लेकिन जब से उसके पति अफसर बने। उनकी नीयता बदली। वे उसे अब अपने योग्य नहीं समझते। वे उससे

नफरत करने लगे। वह एक बच्ची की माँ भी बन गयी थी। पति का यह मन था कि मधुकलमी गँवार है। शर्मो हया की पुतली है। आधुनिक सभ्यता के तौर तरी के नहीं अपनाती। और न उसे जानती है। सोसायटी में खुलकर घूम फिर न सकती है। और न उसे खाने पीने का तरीका ज्ञात है। इसलिए वे उससे घृणा एवं नफरत करेन लगे। एक दिन पति ने उसका त्याग किया। झूठी शान के लिए पति ने उसे छोड़ दिया। पति का यह सलूक देखकर उसके दिलपर गहरी चोट लगी जिगर में इक नासूर पैदा हुआ। अपनी बच्ची को साथ लकर ससुराल से वह जुदा हो गयी। हालात ने जो जहर पिलाया उसे निसंकोच मीरा समझकर पी जाती है। वह दिल को कड़ा करती है। सब्र से काम लेती है। बड़ी लगन से अभ्यास करके डॉक्टर बन जाती है। सारे शहर में कर्तव्यदक्ष कुशल डॉक्टर के नाम से वह मशहूर है। सारे लोगों का ईलाज दिलोजान से करती है। सारा शहर जानता है कि वह विधवा है। लेकिन सच्ची बात तो यह है कि वह सधवा होकर भी विधवा बन जाती है। खुद को बेवा मानकर जिन्दगी बसर करती है। जिगर में चोट छुपाकर भी हँसती है। हँसते हँसते मरीजों का ईलाज करती है।

छ) टगर (टगर) :

टगर " टगर " नाटक की प्रमुख नारी पात्र है। " टगर " इस सामाजिक नाटक की वह नायिका है। वह 25-26 साल की जवाँन हसीना है। वह गोरी नहीं लेकिन बेहद आकर्षक है। ऐसा आकर्षक लिवास पहनती है कि सारे प्रभावित है। लोगों की निगाहें उसकी ओर बार बार उठती हैं। आज वह स्वच्छंद नारी बन गई है। अपनी मर्जी से जिंदगी ऐशो आराम से गुजार रही है। लेकिन इससे पहले वह शर्मो हया की पुतली थी। उसका पहला नाम रश्मि था। उसकी शादी शेखर से हुयी थी। शेखर एक सुन्दर, स्वस्थ महान साहित्यकार है। ऐसे महान लेखक को पति के रूप में पाकर वह निहाल हो गयी। पति महाशय बड़ी काव्यमय भाषा में उसकी सुन्दरता का वर्णन करतें। वे बार बार चाहते कि रश्मि उनसे साहित्य की बातें करें। काफ्का, कामू और सार्त्र के दर्शनपर बहस करें। वह हँसी खुशी से मुक्त व्यवहार करें। शर्मिली रश्मि ने उसके लिए बहोत कोशिश की लेकिन बड़े अफसोस की बात है कि उसकी सारी कोशिशे नाकामयाब रही। एक महान लेखक से अलग अलग साहित्य एवं दर्शन पर बहस करना उसके बस की बात नहीं थी। इसका असर यह हुआ कि पति दु:खी एवं निराश हुए। वक्त ने करवट बदली। शेखर की जिन्दगी में चुपके चुपके से एक और नारी ने प्रवेश किया। उस परायी नारी ने शेखर की मन जीत लिया। शेखर उससे प्यार करने लगे। शेखर रश्मि से नफरत करने लगे। रश्मि और शेखर के बीच दिन दुना रात चौगुना खाई बढ़ती गयी। इस खाई को पारना रश्मि के लिए मुश्कील एवं नामुमकीन था। पति ने उसे घर छोडने के लिए मजबूर किया। एक दिन रश्मि हमेशा के लिए घर छोडकर चली गयी। समय आनेपर दोनों एक दूजे से अलग हुए मतलब शेखर ने

पति के सलूक से उसका दिल चकनाचूर हुआ। इसलिए रश्मि मतलब टमर तलाक शुदा नारी है।

ऊ) अन्धविश्वासी नारी पात्र :

आज के विज्ञान के जमाने में बुद्धि और तर्क के सहारे नारी अपना जीवनयापन करना चाहती है। लेकिन अपवादभूत रूप में कभी कभी यह दिखाई पड़ता है कि, हम विज्ञान युग में नारी के जीवन में अज्ञानरूपी अंधकार फैला हुआ दृष्टिगोचर होता है। इस अज्ञान का एक सजग रूप अन्धविश्वास है। कुछ नारियाँ अन्धविश्वासी चित्रीत करने में नाटककार विष्णु प्रभाकरजी कामयाब हुये हैं। यह भी नारी जीवन का एक यथार्थ है।

क) उमा (बन्दिनी) :

उमा लाखों में एक है। वह सुन्दर, सुशील नारी है। जमींदार कालीनाथ की छोटी बहू है। कालीनाथ एक नम्बर के अन्धविश्वासी है। वे काली माता के परम भक्त है। सारे घरपर उनका गहरा दबाव है। वे अपने घर में काली माता की प्रतिमा की स्थापना करना चाहते हैं। पुरोहितजी ने उन्हें यह बताया था कि अगले मंगलवार को रोहिणी नक्षत्र में ठीक दस बजे प्रतिमा स्थापन करने का मुहूर्त है। सारा इन्तजाम किया गया है। बड़ा जश्न होगा। प्रीतिभोज होगा। चार प्रकार की मिठाईयाँ तैयार की गयी है। जमींदार ब्राह्मणों को दान भी देनेवाले हैं। जमींदार के कहनेपर उमा का बड़ा देवर उपेन्द्र देवीमाता की प्रतिमा लाने के लिए शहर गया है। जमींदार रात में एक सपना देखते हैं। सपने में देवी माता ने आदेश दिया की वह इस घर में छोटी बहूँ के रूप में अवतरित हुयी है। जमींदार को ताज्जुब होता है। काली माता का आदेश सर आँखोंपर मानकर वे उमा को काली माता समझते हैं। वे उसकी पूजा करना चाहते हैं। वे उमा को माँ ! माँ ! कहकर उसके चरणों में साष्टांग प्रणाम की मुद्रा में लेट जाते हैं। उमा चिल्ला चिल्ला कर कहती है, " नहीं, नहीं, पिताजी। मैं उमा हूँ उमा। आपकी छोटी बहूँ। आप यह क्या कर रहे हैं। उठीये। "[31] जमींदार टस से मस नहीं होते। यह सब देखकर उमा पागल बन जाती है। वह बेबस असमर्थ एवं असहाय्य है। जमींदार कालीनाथ की वजह से वह आरोपीत देवी बन जाती है। जाल में फँसे हुए परिन्दे के समान उसकी अवस्था हो जाती है। उसे पूजामंच पर दबाव से बैठना पड़ता है। उसकी अवस्था विक्षिप्त सी है। पुरोहित, भक्तगण जमींदार उसकी आरती उतारते हैं। उसके सामने चण्डी पाठ पढ़ा जाता है। सारे गाँव के लोग उसे काली माता मानने लगते हैं। रात के अंधेरे में सुरेन्द्र उससे वादा करता है कि अगले शनिवार को वह उसे चोरी चोरी से लेकर जायेगा। तब तक वह सब्र करें। हरदिन सुबह और शाम उसकी पूजा एवं जयजयकार होता है। इसका असर यह होता है कि वह भी अन्धविश्वासी बनकर उस महल में इतना रंग जाती है कि खुद को सचमुच काली माता का अवतार मानने लगती है। उमा अन्धविश्वासी बन जाती है। उसे

लगता है कि उसके ही चरणामृत से विश्वेश्वरी की बेटी स्वस्थ रही। पूँटी का बेटा ठीक हुआ। तो उसे पूरा यकीन होता है कि वह सचमुच कालीमाता है; लेकिन उसके चरणामृत से पीकर भी अन्नु बच नहीं सकता। अंत में उमा को आत्मग्लानि होती है। वह खुदकुशी करती है।

ख) पूँटी (बन्दिनी) :

पूँटी इस जवान नारी है। वह " बन्दिनी " नाटक की गौण स्त्री पात्र है। वह एक माँ है। वह राखाल की पुत्र वधु है। उसका बच्चा सख्त बीमार है; उसे तेज बुखार है। बच्चे के सर पर मौत सँवार है। बच्चे की दशा देखकर वह रंजूर एवं गमों से चूर होती है। राखाल उसे लेकर कालीमाता मतलब उमा के पास आता है; सच बात तो यह है कि पूँटी उमा की सहेली है। पुरोहित बिमार बच्चे के मुँह में चरणामृत डालता है। पूँटी दामन फैलाकर देवी माता से कहती है, " माँ यह सबेरे से आँख नहीं खोल रहा। तेज ताप से इसका शरीर जल रहा है; मैं नहीं जानती यह कैसा ज्वर है। तुम अब साक्षात जगदम्बा हो। मेरी सखी उमा नहीं हो। करूणामयी काली हो। दया करो। मेरे बच्चे को बचा लो। "[32]

उसकी आवाज में टीस एवं वेदना थी।

तो उमा यह सब देखकर दिलोजान से परमात्मा से दुँवा माँगती है कि बच्चे का जीवन लौटा दो। कुछ पलों के बाद बच्चा आँखे खोलता है। पूँटी निहाल होती है। वह देवी माता की जयजयकार करती है। सब लोग भी देवी को एक साथ प्रणाम करते हैं। काली माता का जयजयकार करते हैं।

ग) विश्वेश्वरी (बन्दिनी) :

विश्वेश्वरी " बन्दिनी " नाटक की गौण नारी पात्र है। वह अधेर उमर की नारी है। वह अन्धविश्वासी है। जमींदार कालीनाथ एक नम्बर के अन्धविश्वासी है। सपने में जो उन्हें कालीमाता ने आदेश दिया वह मानकर अपनी छोटी बहू उमा को सचमुच कालीमाता का रूप मानते हैं। सारे परिवार पर उनका गहरा दबाव है। बेचारी बदनसीब उमा को जबरदस्ती से पूजा स्थल पर बिठाया जाता है। उसकी पूजा होती है। सारे गाव के लोग उसे कालीमाता मानते हैं। विश्वेश्वरी मुसीबत की मारी है। उसकी बेटी तीन दिन से छटपटा रही है। इसलिए वह देवी माता मतलब उमा के पास आती है। दामन फैलाकर देवी माता के सामने दया की भीख माँगती है। जमींदार कालीनाथ उसे कालीमाता का चरणामृत देते हैं। और उससे कहते हैं कि यह चरणामृत बेटी को पिला दे। सब ठीक हो जाएगा। वह चरणामृत लेकर घर जाती है। कुछ समय के बाद बड़ी खुशी से आकर देवी माता मतलब उमा से कहती है, " जय मा चण्डी ! जय महाकाली ! मेरी बेटी ने माँ का चरणामृत पाकर फूल जैसे कोमल और सुन्दर शिशु को जन्म दिया है। जगदम्बा के आशिर्वाद से माँ और बच्चा दोनों स्वस्थ हैं। "[33]

अन्धविश्वासी नारी के रूप में वह चित्रीत हुयी है।

ए) अन्य नारी पात्र :

आज का नारी जीवन बहुआयामी है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नारी के विविध रूप दिखायी पड़ते हैं। वे गौण होकर भी नारी जीवन का एक अंग बनकर ही प्रस्तुत होते हैं। इस दृष्टि से विष्णु प्रभाकर के अन्य नारी पात्रों का भी महत्त्व स्वीकार किया जा सकता है।

त) पद्मावती (अब और नहीं) :

पद्मावती " अब और नहीं " नाटक की गौण नारी पात्र है। वह वीरेन्द्र प्रताप की माँ है। वह अपने बेटे की शादी करना चाहती है। शान्ता को देखने के लिए वीरेन्द्र प्रताप को लेकर आती है। सुन्दर जवाँन संगीतप्रेमी कलाप्रेमी अन्नपूर्णा शान्ता उन्हें बहू के रूप में पसन्द आती है। वीरेन्द्र प्रताप और शान्ता की शादी होती है। आँखों में सुनहरी संसार के सपने लेकर शान्ता ससुराल आती है। वीरेन्द्र प्रताप उसे दिलोजान से चाहते हैं। वह एक पल भी उससे जुदा नहीं होना चाहते। शान्ता सितार को दिलोजान से चाहती है। वह सितार लेकर ससुराल आयी थी। शान्ता दुल्हन वेश में चौकीपर बैठकर इतमीनान से सितार बजाती है। तो यह सुनकर पद्मावती घुस्से की तैश में आती है शान्ता से कहती है " तो तुम यहाँ बैठी हो सितार लिये। कितनी बार कहा कि बहू ! अब तुम्हें सितार बजाने की क्या जरूरत है ? जिसके लिए जरूरत थी वह काम हो गया। तुम अब इस घर की बहू हो। इस घर की और घरवाले की सार-सँभाल तुम्हारा मुख्य काम है, सितार बजाना नहीं " [34] यह सुनकर शान्ता के दिलपर गहरी चोट लग जाती है। शान्ता सितार लेकर गोदाम की तरफ जाती है। रास्ते में पद्मावती मिलती है वह उससे कहती है, " (प्रसन्न होकर) हाँ, वहीं उचित स्थान है अब इसके लिए। बॉक्स में अच्छी तरह बन्द करके रखना। बाहर तार टूट सकते हैं।

शान्ता : (अस्फुट स्वर) तार तो टूट चूके। "[35]

थ) इन्दु (टूटते परिवेश) :

" टूटते परिवेश " नाटक की वह गौण नारी पात्र है। वह गृहस्वामी विश्वजीत की बड़ी बेटी है। उसकी उमर 32-33 साल की है। वह शादी शुदा है। वह इसी शहर में अपने पति के साथ अलग रहती है। सारे परिवार का विघटन होता है तो गृहस्वामी विश्वजीत के दिलपर गहरी चोट लगती है। वे खुदकुशी करने के लिए घर से निकल जाते हैं। करूणा चिंतीत होती है। वह घबराती है। अपने सारे बच्चों को बुलावा भेजती है। सन्देशा मिलने पर इन्दु आती है। लेकिन उसे अपनी ही पड़ी है। आकर वह कहती है, " (पास आकर) कैसी हो दीप्ति ? नमस्ते ममा ! (शरत को देखकर) वाह, शरत भैया भी है।

नमस्ते भैया ! क्या बात है ममा ? (करूणा के पास जा खड़ी होती है) आजकल जरा भी फुर्सत नहीं है। मकान का काम फैला हुआ है। लेकिन तुम्हारा संदेशा मिला कि बहुत ही आवश्यक बात है, तो उन्हें वहाँ छोड़कर आयी हूँ। "[36] पिताजी रूठकर घर से चले गये। अभी तक उनकी वापसी नहीं हुयी इसकी चिन्ता उसे नहीं है। उसे सिर्फ अपने कामों की पड़ी है। नया मकान बन रहा है। यहाँ ठहरने के लिए उसके पास समय नहीं है। जैसे ही विश्वजीत वापस आते हैं। वैसे ही एक पल में घरकी तरफ वह भाग जाती है। जाने से पहले वह माँ से कहती है, " बेकार डर रही थी। पापा कोई दूध पीते बच्चे हैं ? अच्छा ममा अब चलू। (घडी देखकर) बाबा रे ! आठ बज रहे हैं। (मुडकर) परसों जरूर आऊँगी, पापा बाई, बाई। "[37] मशीनी युग की करामत है वक्त के साथ बड़ी बेटी इन्दु भी जमाने के साथ साथ बदली है। जिसके दिल में अपने माता पिता के प्रति थोडासा भी प्यार नहीं पनपता।

द) कुँआरी माता – आनन्दी (गान्धार की भिक्षुणी)

गान्धार की भिक्षुणी का नाम आनन्दी है। वह जवाँन खुबसुरत नारी है। वह देशप्रेमी नारी है। मालव देश का राजा परिव्राजक नपुंसक एवं कायर है। हूण सरदार उसके सैनिकोंने इसका फायदा उठाया। उन्होंने मालव वासियोंपर मनमाने अत्याचार किये। उन्होंने औरतों की इज्जते लूटी। हूण सरदार ने आनन्दी पर बलात्कार किया उसकी इज्जत लुटी। उसके दिलपर गहरी चोट लगी। वह खुदकुशी करनेवाली थी। लेकिन राजा यशोधर्मन ने बड़ी कुशलता से उसका मनपरिवर्तन किया। हूण सरदार ने उसपर बलात्कार किया था इसका असर यह होता है कि कुछ दिन गुजरने के बाद उसने एक बच्चे को जन्म दिया। वह कुँआरी माता बनी। उसे आत्मग्लानि होती है। बच्चे को उसने पाला पोसा। हूण सरदार के दिल में यह गलतफहमी होती है कि जरूर आनन्दी के दिल में उसके प्रति प्यार है। एक दिन आनन्दी मौका मिलते ही हूण सरदार का खून करती है। इसतरह जिस हूण सरदार ने उसे अपनी बर्बर वासना का शिकार बनाया। जिसने उसकी इज्जत लूटीं। उसका खून करके उसने ही चैन की साँस ली। यह अनचाहा बच्चा है। फिर भी उसके प्रति आनन्दी के दिल में बारबार ममता पनपती है। यह नवजात शिशु वह पाप समझकर तक्षशिला के भिक्षुणी को दे आती है। चार पाँच साल वह भिक्षुणी इस बच्चे की दिलोजान से परवरीश करती है। इस मासूम एवं नादान बच्चे का नाम गौरव है। वह भिक्षुणी यह बच्चा यशोधर्मन को सौंपती है। वे उसे भारती के साथ भेजते हैं। यह अनचाहा बच्चा है। फिर भी अपने लगते जिगर बेटे को देखने के लिए वह जल बिन मछली के समान तडफती है। आनन्दी बेताब होकर अपनी माँ से कहती है, " (गीला मुँह उठाकर) जिन हाथों से मैंने उसे अनचाही सन्तान के पिता की हत्या कर दी वे ही हाथ उसे छाती में भर लेने को मचल उठे हैं। बताओ माँ वह कहा है ? वह यहाँ कैसे आया ?

माँ – तक्षशिला की जिस भिक्षुणी को तुम उसे सौंप आयी थी वही उसे जैनेंद्र को सौंप गयी है ; वहाँ तो वह आज ही भारती के साथ आयी है। "[38]

गौरव को देखकर वह मानो खुशी से पागल होती है। बड़े प्यार से उसे अपने छाती से लगाती है।

छ) प्रतिमा : (श्वेतकमल)

परिवार में प्रतिमा सब से छोटी बच्ची है। अभी वह स्कूल में जाती है। वह माँ की लाड़ली बेटी है। वह बच्ची है फिर भी काफी समझदार है। अपनी गरीबी हालत से वह वाकिब है। उसकी बिन्दु दीदी दप्तर में काम करती है। चार पैसे कमाती है। उन पैसों से परिवार का गुजारा होता है। जौहरी की प्रायव्हेट सेक्रेटरी जब पत्र और तनख्वाह लेकर बिन्दु के घर आती है। वह बिन्दु को देती है। बिन्दु जब तनख्वाह के रूपयें गिनती है तब दीदी को खुश करने के लिए वह गरमागरम चाय लेकर आती है। लेकिन नीलिमा उससे टकराती है। चाय से प्रतिमा का पैर जलता है। राखी अपने घर से बरनॉल की ट्युब लाने के लिए नीलिमा से कहती है। बेबी का पैर ठीक होता है। लेकिन निशान बाकी रह जाते हैं। बिन्दु के प्रति उसके दिल में इज्जत है। बिन्दु जब नौकरी छोड़ देती है तो प्रतिमा नीलिमा से कहती है, " दीदी मैं आप से बहुत छोटी हूँ पर मुझे लगता है बड़ी दीदी जो करती है, ठीक करती है। कोई हमारी गरीबी का फायदा क्यों उठाये। "[39] वह छोटी है फिर भी काफी समझदार है। वह नीलिमा को मनाती है कि भूलकर भी वह घर छोड़कर भाग कर न जाये। जब नीलिमा डॉ. जौहरी से मिलने जाती है तो यह राज की बात बिन्दु दीदी को बताती है कि बिन्दु दीदी को नौकरी मिले। इसलिए नीलिमा डॉ. जौहरी के पास गयी है। इसतरह प्रतिमा काफी समझदार बेबी है। वह होशियार एवं समझदार है। नीलिमा और प्रतिमा का यह वार्तालाप देखिए –

" नीलिमा – (व्यंग से हँसकर) मरना क्या होता है, जानती है बेबी ?

प्रतीमा – नहीं जानती तो अब जान लूँगी पर बुरे काम कभी नहीं करूँगी। "[40]

ज) अमिता : (बन्दिनी)

अमिता तीन – साढ़े तीन साल की एक चपल सुन्दर बालिका है। वह बड़ी नटखट एवं शरारती बालिका है। वह शशांक और मंजरी की लाड़ली बेटी है। वह अपनी दादी शान्ता के पास हमेशा रहती है। शान्ता उसे दिलोजान से चाहती है। अमिता भी अपनी दादी से एक पल भी जुदा नहीं होना चाहती। शान्ता उसका लाड करती है। वह दादी के साथ ही स्कूल जाना चाहती है। लेकिन उसकी माँ उसे समझाती है कि

दादी बिमार है इसलिये वह उसके साथ जायेगी। लेकिन जिद्दी अमिता को यह बात मंजूर नहीं। तो वीरेन्द्र प्रताप आकर उसे डाँटते हैं फिर भी बच्ची टस से मस नहीं होती। तो उसके दादा वीरेन्द्र उसे खिंचकर ले जाते हैं। वह रोती है, चिल्लाती है। चिखती है। यह सब देखकर शान्ता के दिलपर गहरी चोट लग जाती है। मासूम नादान बालिका के रूप में वह चित्रीत हुयी है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि :-

(1) जहाँ एक ओर विष्णु प्रभाकर आदर्शवादी हैं वहाँ दूसरी ओर वे यथार्थवादी भी हैं। अतः उन्होंने अपने नाटकों में यथार्थवादी नारी पात्रों की भी सृष्टि की है।

(2) उनका नारी विषयक यथार्थवादी दृष्टिकोन व्यापक और सूक्ष्म है। साथ ही उन्होंने जो कुछ देखा, भोगा और सोचा उसीका प्रतिफलन ही उनके नाटकों के यथार्थवादी नारी पात्र है।

(3) उनके नाटकों के यथार्थवादी नारी-पात्रों में व्यावसायिक नारी पात्रों की अधिकता है। इनमें से कुछ नारी पात्र अर्थोत्पादन के साथ ही साथ व्यावसायिक कर्तव्य परायण भी हैं; तो कुछ ऐयाशी।

(4) व्यावसायिक यथार्थवादी नारी पात्रों के अतिरिक्त उनके नाटकों में विद्रोही, स्वच्छंदी, अत्याधुनिका परित्यक्ता, अंधविश्वासी आदि नारी पात्र दिखाई देते हैं।

(5) उनके यथार्थवादी नारी-पात्रों में भारतीय एवं पाश्चात्य प्रभाव स्पष्टतया परिलक्षित होता है।

संदर्भ –

1. हिन्दी साहित्य कोश भाग–1 सम्पा.धीरेन्द्र वर्मा पृ.661
2. समीक्षा शास्त्र डॉ.कृष्णलाल हंस पृ.684–865 सं.1975
3. वही वही पृ.
4. साहित्यिक निबंध राजनाथ शर्मा पृ.480 अष्टं सं.1965
5. विष्णु प्रभाकर:व्यक्तित्व एवं कृत्वित्व–डॉ.राजलक्ष्मी नायडू पृ.111 प्र.सं.1991
6. वही पृ.100
7. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड– –विष्णु प्रभाकर–(नाटक–युगे युगे क्रान्ति पृ.313
8. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्णनाटक खण्ड–4 "सत्ता के आरपार–विष्णु प्रभाकर–पृ.410 प्र.सं.1989
9. वही वही पृ.419 प्र.सं.1989
10. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–5 "गान्धार की भिक्षुणी पृ.120 सं.1989
11. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–4 "डॉक्टर" पृ. 178 सं.1989
12. वही वही पृ.200 प्र.सं.1989
13. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–6 "श्वेत कमल" पृ.15 प्र.सं.1989
14. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–4 "टूटते परिवेश" पृ.410 प्र.सं.1989
15. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–4 "अब और नही"पृ. 256 प्र.सं.1989
16. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–6 "श्वेत कमल" पृ.15 प्र.सं.1989
17. वही वही पृ.15 प्र.सं.1989
18. वही वही पृ.52 प्र.सं.1989
19. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–4 "अब और नही" पृ.250 प्र.सं.1989
20. वही वही पृ.262 प्र.सं.1989
21. वही वही पृ.272 प्र.सं.1989
22. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–6 बन्दिनी पृ.93 प्र.सं.1989
23. वही वही पृ. 93 प्र.सं.1989
24. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–4 सत्ता के आरपार पृ.434प्र.सं.1989
25. वही वही पृ.435 प्र.सं.1989
26. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–5 नव प्रभात पृ.49 प्र.सं.1989
27. वही वही पृ.56 प्र.सं.1989
28. विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड–4 युगे युगे क्रान्ति पृ.328 प्र.सं.1989

29.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड -5	गान्धार की भिक्षुणी	पृ. 92 प्र.सं.1989
30	वही	वही	पृ.113 प्र.सं.1989
31.	वही	वही	पृ.111 प्र.सं.1989
32.	वही	वही	पृ.142 प्र.सं.1989
33.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-5	केरल का क्रान्तिकारी	पृ.156-157 प्र.सं.1989
34.	वही	वही	पृ.158 प्र.सं.1989
35.	वही	वही	पृ.196-197 प्र.सं.1989
36.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-4	युगे युगे क्रान्ति	पृ.325 प्र.सं.1989
37.	वही	वही	पृ.328 प्र.सं.1989
38.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-4	सत्ता के चार-पाठ	पृ.410 प्र.सं.1989
39.	वही	वही	पृ.411 प्र.सं.1989
40.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटके खण्ड-5	नव प्रभात	पृ.42 प्र.सं.1989
41.	वही	वही	पृ.43-44प्र.सं.1989
42.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-6	बन्दिनी	पृ.82 प्र.सं.1989
43.	वही	वही	पृ.83 प्र.सं.1989
44.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-4	टूटते परिवेश	पृ.223 प्र.सं.1989
45.	वही	ढगर	पृ.351 प्र.सं.1989
46.	वही	वही	पृ.354 प्र.सं.1989
47.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-6	धुटासा और किरण	पृ.149 प्र.सं.1989
48.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-4	युगे युगे क्रान्ति	पृ.301 प्र.सं.1989
49	वही	वही	पृ.304 प्र.सं.1989
50.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-5	गान्धार की भिक्षुकी	पृ.90 प्र.सं.1989
51.	वही	वही	पृ.97-98 प्र.सं.1989
52.	वही	वही	पृ.109 प्र.सं.1989
53.	वही	वही	पृ.136 प्र.सं.1989
54.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-5	केरल का क्रान्तिकारी	पृ.170-171 प्र.सं.1989
55.	वही	वही	पृ.159 प्र.सं.1989
56.	वही	वही	पृ.181 प्र.सं.1989
57.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-4	युगे युगे क्रान्ति	पृ.314 प्र.सं.1989

58.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-4	अब और नही	पृ.258 प्र.सं.1989
59.	वही	वही	पृ.250 प्र.सं.1989
60.	वही	वही	पृ.294 प्र.सं.1989
61.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-5	नव प्रभात	पृ.22 प्र.सं.1989
62.	वही	वही	पृ.35-36 प्र.सं.1989
63.	विष्णु प्रभाकर के सम्पूर्ण नाटक खण्ड-5	नव प्रभात	पृ.42 प्र.सं.1989
64.	वही	वही	पृ.44-45 प्र.सं.1989
65.	वही	वही	पृ.73 प्र.सं.1989
66.	वही	वही	पृ.73 प्र.सं.1989
67.	वही	वही	पृ.56 प्र.सं.1989